वर्ष 11, अंक 12 सितम्बर 2012

डाक पंजीयन संख्या ए-डी-306/2012-14

आर.एन.आई. : 8380

# विश्व स्नेह समाज

## एक क्रान्ति

अंग्रेज़ी पढ़ि के जदपि
सब गुन होत प्रवीन।
पै निज भाषा ज्ञान बिन
रहत हीन के हीन।

*भारतेन्दु हरिशचन्द*

मूल्य 10/-रू

अब हिन्दी की बारी है, नीति यह सरकारी है

कल, आज और कल भी बहुपयोगी
विश्व स्नेह समाज
मासिक, वर्ष:11, अंक 12
अगस्त : 2012, इलाहाबाद

मुख्य संरक्षक
श्री बुद्धिसेन शर्मा
संरक्षक सदस्य
डॉ0 तारा सिंह, मुंबई
श्री डी.पी.उपाध्याय, बलिया,उ.प्र.

सम्पादक
गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी
प्रबंध सम्पादक
श्रीमती जया
विज्ञापन प्रबंधक
महेन्द्र कुमार अग्रवाल
साहित्य/भाषा परामर्शक
डॉ० दुर्गाशरण मिश्र, रोहतास, बिहार

**सम्पादकीय कार्यालय:**
एल.आई.जी.–93, नीम सराय कालोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद –211011 का0: 09335155949
ई–मेल:vsnehsamaj@rediffmail.com

आवश्यक सूचना

01 पत्रिका में प्रकाशित किसी भी रचना के लिए लेखक स्वयं जिम्मेदार होगा। पत्रिका परिवार, प्रकाशक या संपादक का इससे कोई लेना देना नहीं होगा। विवाद के संदर्भ में न्यायालय क्षेत्र इलाहाबाद होगा।
02 सभी सम्मानित सदस्यों से आग्रह है कि अगर पत्रिका का अंक आपको उक्त माह की 15 तारिख तक प्राप्त न हो तो कृपया हमें एक पोस्ट कार्ड से सूचित करने की कृपा करें अथवा पत्रिका के कार्यालय को सूचित करें.

स्वामी, प्रकाशक,संपादक, मुद्रक गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी द्वारा भार्गव प्रेस, बाई का बाग से मुद्रित कराकर एल.आई.जी–93, नीम सराय कॉलोनी, मुण्डेरा,इलाहाबाद से प्रकाशित कराया गया.
सभी पद अवैतनिक हैं।

| | |
|---|---|
| एक प्रति: | रु0 10/– |
| वार्षिक: | रु0 110/– |
| पंचवर्षीय– | रु0 500/– |
| आजीवन सदस्य: | रु0 1100/– |
| संरक्षक सदस्य: | रु0 5000/– |

## अंदर पढ़िए

**अब हिन्दी की बारी है, नीति यह सरकारी है..... 06**
-कु० श्रद्धा शर्मा

**हिन्दी बनाम राष्ट्रीय एकता...................... 09**
-अशोक कुमार शेरी

**विकुंठ बात ....................................11**
-डॉ० दुर्गाशरण मिश्र

**स्व० बाला सिंह पाल ...........................12**
-श्री शम्भु प्रसाद भट्ट 'स्नेहिल'

**दानवीर त्याग मूर्ति ऋषीश्वर दधीचि.................14**
-देवदत्त शर्मा 'दाधीच'

**रमज़ान महीने की कड़ी इबादत व रियाज़त का इनाम है–ईद 19**
-रमेश कुमार शर्मा

## स्थायी स्तम्भ

| | |
|---|---|
| प्रेरक प्रसंग | 04 |
| अपनी बात | 05 |
| कविताएँ | 9, 22, 28,29 |
| बाल कोना | 13 |
| अध्यात्म | 21 |
| भाग्य (कहानी) : डॉ0 सुरेश प्रकाश शुक्ल | 16 |
| घर परिवार (कहानी) : सत्यपाल निश्चिंत | 22 |
| यादें: मेरा सुन्दर सपना बीत गया | 24 |
| घरेलू सुझाव | 27 |
| आपकी डाक | 30 |
| साहित्य समाचार– | 24, 31 |
| लघु कथा | 32 |
| स्वास्थ्य | 33 |
| समीक्षा | 34 |

विद्यादान सबसे बड़ा दान है, अन्य प्रकार के दान से वह वस्तु आपके पास से खतम हो सकती है; किन्तु विद्या दान प्राप्तकर्ता के पास से कभी खतम नहीं होता, यह निरन्तर वर्धमान रहता है.

++++++++++++++++++++++++++++++++

पति-पत्नी, भाई-बहन, पिता-पुत्र आदि सांसारिक सम्बन्धों का अलगाव तो हम दिन प्रतिदिन देखते ही हैं, किन्तु शरीर का आत्मा से सम्बन्ध विच्छेद वियोग की पराकाष्ठा है.

++++++++++++++++++++++++++++++++

प्रेम की सीख पतिंग से सीखो, जो अपने प्रेमी पर न्योछावर होकर सदा के लिए एकाकार हो जाता है. सच्चा प्रेमी प्रेम के राह पर अवरोध, अलगाव को सहन नहीं कर सकता, उस पर कुर्बान हो जाना, अपनी गति समझता है.

++++++++++++++++++++++++++++++++

मन की क्या ही विलक्षण गति है. क्षण में प्रसन्न व क्षण में खिन्न हो जाता है. वायु से भी बलवान मन को नियन्त्रित रखना बड़ा ही दुष्कर कार्य है. इसका बस में होना ही वास्तविक लक्ष्य है.

जीवन के सब दिन एक समान नहीं होते. प्रत्येक वस्तु एक रस नहीं रह सकती, मानव को बाल, युवा, वृद्ध अवस्थाओं में जाना ही पड़ता है.

++++++++++++++++++++++++++++++++

हे सुन्दरी! जिस रूप पर तुझे आज गर्व है, एक दिन इस रूप की ओर देखने वाला कोई न होगा. झुर्रियों से लिपटा वदन केवल रूप का कंकाल ही होगा.

++++++++++++++++++++++++++++++++

चिन्ता से जीवन का विकास रुक जाता है, धीरे धीरे जीवन भार स्वरूप हो जाता है. चिन्तित मन सदा दुःखों को आमन्त्रित करता रहता हैं.

++++++++++++++++++++++++++++++++

असंयत, अविवेकी, व्यभिचारी भावों से मानव उलझन में पड़कर अशान्त और अनियन्त्रित हो जाता है.

++++++++++++++++++++++++++++++

सूर्य तपता रहता है, तपकर ही दूसरों को जीवन देता है. इस प्रकार दूसरों की भलाई करने के लिए अपने को कठिनाई में डालना ही पड़ता है. बिना त्याग के दूसरों का हित सम्भव नहीं.

✍**दाऊजी**

# आदाब अर्ज़ है

इतना सीधा न बनो, सबै उखाड़े मूँछ।
पहले सीधा वृक्ष ही, कटता है मय ठूंठ।।

धैर्य राखि मेहनत करै, हो दरिद्रता दूर।
स्वच्छ होय सुन्दर दिखे, मलिनता हो चूर।।

परोपकारी सुखी रहे, विपत न आती कोय।
ईश्वर की महती कृपा, धन जन दूने होय।।

आज्ञाकारी पुत्र हो, विश्वासी हो मित्र।
विद्यादायक गुरू रहें, पत्नी हो सौमित्र।।

जो बोलै फटकार के, दिल का मानो साफ।
मधुरी वाणी बोलता, कपटी करो न माफ।।

मूर्ख शिष्य राखो नहीं, न रखो कर्कसा नारी।
फल गर मीठा न मिले, देव कुमित्र सम गारी।।

मणि पहिनो तुम पाँव में, सर पर होवै कांच।
कीमत मणि की न घटै, सच्चाई नहि आँच।।

मित्र उसे ही मानिए, रहे हमेशा साथ।
घर में साँप सा पल रहा, नौकर होवै पुष्ट।।

पुत्र होय या शिष्य हो, सीमा में फटकार।
अधिक प्रताड़ना से भँवर, निकल जात तलवार।।

शीलवान गुणवान हो, एक पुत्र रहे भाय।
होय निकम्मे दस अगर, कुल की इज्जत जाय।।

✍**संगम लाल त्रिपाठी** 'भँवर', प्रतापगढ़, उ.प्र.

अपनी बात

# हिन्दी अपनाएँ, भ्रष्टाचार भगाएँ

**हि**न्दी को राष्ट्रभाषा न बनने देने में हमारे अधिकारियों की लाल फीताशाही व नेताओं की राजनीति की मुख्य भूमिका है. राष्ट्र की जनता हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रूप में अपनाना चाहती है, इसे फूलते-फलते देखना चाहती है. लेकिन भारत व पाकिस्तान जैसा है. दोनों देशों की आम जनता तो चाहती है कि आपस में अमन चैन बरकरार रहे लेकिन नेता अपने निहित स्वार्थो के चलते ऐसा होना देना नहीं चाहते. गत वर्षो में मैंने कई हिन्दीतर भाषी राज्यों की यात्रा की. इन राज्यों में हिन्दी भाषी राज्यों से अच्छी हिन्दी बोलते लोग मिले. हिन्दी के प्रति उनके मन में आदर व सम्मान भी है. तमाम हिन्दीतर भाषी निवासियों/साहित्याकारों के पत्र आते हैं, दूरभाष पर वार्ताएं होती हैं. हिन्दी को लेकर किसी ने भी विरोध नहीं किया. हां इन तमाम यात्राओं व वार्ताओं से यह निष्कर्ष अवश्य निकला कि हर जगह अंग्रेजी को अहमियत दी जाती है और हिन्दी के प्रति मन में उपेक्षा का भाव हैं. अंग्रेजी को लोग रोजगार/व्यवसाय के लिए जरूरी मानते है ऐसा क्यों? क्या जापान के लोग जापानी भाषा, रूस के लोग रसिया, को अपनाते हुए अपना व्यवसाय या रोजगार नहीं करते? करते हैं क्योंकि उनके मन में अपनी भाषा के प्रति श्रद्धा है. वहां के अधिकारी/नेता इसे निहित स्वार्थ के लिए कमतर नहीं आँकते. लेकिन हमारे देश के नेता जो जो हिन्दी भाषी राज्यों से हैं वे भी इलेक्ट्रानिक मीडिया में, वार्ताओं में अपनी बात अंग्रेजी में रखते हैं. केवल वोट मांगने हिन्दी में आते हैं. हिन्दीतर भाषी अगाथा संगमा हिन्दी में मंत्री पद की शपथ लेती हैं लेकिन हिन्दी भाषी राज्यों के मंत्री/सांसद अंग्रेजी में. किसी अधिकारी से मिलने या बात करने जाइए तो वह अपनी बात अंग्रेजी में रखता है ताकि आम जनता उसे समझे ही न. बस सर हिलाती रहे. फिल्में हिन्दी में बनती हैं, उनका दर्शक हिन्दी जानने वाला होता है, लेकिन अभिनेता/अभिनेत्री व अन्य कलाकार अपनी बातें अंग्रेजी में रखते हैं. खाते हिन्दी का और बखारते अंग्रेजी का हैं. आखिर कब तक चलेगा ऐसा?

गत वर्ष पांडीचेरी विश्वविद्यालय की हिन्दी विभागाध्यक्षा डॉ० विजयलक्ष्मी जी का फोन आया कि आपका पत्र/पत्रिका नहीं मिलती. मैंने कहां 'यहाँ से हर माह जाती है.' तो उन्होंने कहा-'क्या आप पता हिन्दी में लिखवाते हैं?' मैंने कहा-'हिन्दी में लिखूंगा ही. अंग्रेजी तो मुझे आती ही नहीं.' वे बोली-'इसीलिए तो नहीं मिलती है.' मैंने कहा 'जब हिन्दी में पता लिखे होने पर अमेरिका, जापान व कनाडा में मिल सकती है तो भारत में क्यों नहीं?' काफी जद्दो जहद के बाद वे तैयार हुई कि मैं डाकघर में शिकायत करती हूँ. शिकायत करने पर हिन्दी में ही लिखे पते पर उनको डाक मिलती है. कई साहित्यकार अंग्रेजी में पता लिखकर भेजते थे. मैंने स्पष्ट लिखा कि अंग्रेजी के शब्दों का प्रयोग होने पर आपके पत्रों/रचनाओं पर विचार नहीं किया जाएगा. अधिकतर विद्वदजन अब हिन्दी में पत्र व्यवहार करने लगे हैं.

जब पूरा देश चाहता है हिन्दी को अपनाना तो इन पूर्वग्रह से ग्रस्त अधिकारियों व नेताओं की क्या औकात जो रोक सकें. बस जरूरत है थोड़ा दृढ़ होने की. अगर हम हिन्दी में पत्र-व्यवहार करेंगे, सरकारी विभागों से प्राप्त अंग्रेजी के पत्रों/नियमावली को हिन्दी में मांगना शुरू कर देंगे तो अपने आप सब काम हिन्दी में होने लगेगा. भ्रष्टाचार का एक कारण नियमावलियों/सरकारी दस्तावेजों का हिन्दी में न होना भी है. इसी वजह से कार्यालयों के बाबू आम आदमी को बेवकूफ बनाकर पैसे ऐंठते रहते हैं. अगर पूरे देश में सरकारी काम काज हिन्दी में होने लगेगें तो भ्रष्टाचार पर काफी हद तक नियंत्रण हो सकता है.

गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी

मुद्दा

# अब हिन्दी की बारी है, नीति यह सरकारी है

■पाली ग्रंथों में भारत को भारतखण्ड तथा जम्बूदीप के नाम से जाना जाता था. पर फ़ारसियों ने सिंध वाले प्रदेश को हिन्द तथा वहां के सिन्धी निवासियों को हिन्दी कहा. जो सिन्ध से हिन्द और सिन्धी से हिन्दी बन गई.

■वन्दा नवाज की रचना 'मिराजुल आशिकीन' खड़ी बोली हिन्दी की पहली प्रामाणिक कृति मानी जाती है.

■दक्खिनी के अन्तिम कवि वली को ही उर्दू का प्रथम कवि माना जाता है.

■ग्रीक निवासियों ने इस देश को इन्दिका शब्द से, यहां के निवासियों को इन्दोई शब्द से पुकारा जो आगे चलकर इन्दिका शब्द लैटिन में इन्डिया हो गया.

■चन्द वरदाई को हिन्दी का आदि कवि माना गया है.

✍**कुमारी श्रद्धा,** मुम्बई, महाराष्ट्र

**ई**सा के १५०० वर्ष पूर्व यहां के लोग वैदिक संस्कृत बोलते थे और आम बोलचाल में लोग इसे देववाणी कहते थे. मुसलमानों के यहां आने पर उन्होंने हिन्द नाम को बहुचर्चित बना दिया और हिन्द वासी जो उस समय तक हिन्दी कहलाते थे, उन्हें अब हिन्दी से हिन्दू कहा जाने लगा. भाषा के नामकरण की आवश्यकता पड़ने पर हिन्द देश में रहने वाले हिन्दूओं की भाषा को उन्होंने जुबान-ई-हिन्द कहा. जैसे तुर्क की भाषा तुर्की, रूस की रूसी और चीन की चीनी. वैसे ही कालान्तर में हिन्द की भाषा हिन्दी कहलाई.

इससे काफी पहले बौद्ध धर्म के पाली ग्रंथों तक में भारत को भारतखण्ड तथा जम्बूदीप के नाम से पुकारा जाता था. पर फ़ारस निवासियों के भारत में आगमन के पश्चात उन्होंने सिंध वाले प्रदेश को हिन्द कहा तथा वहां के सिन्धी निवासियों को हिन्दी कहा. भाषा विज्ञान की दृष्टि से भी 'स' फारसी में 'ह' की ध्वनि में परिवर्तित हो जाता है. इस प्रकार सिन्ध से हिन्द और सिन्धी से हिन्दी हो जाना स्वाभाविक भी था. काफ़ी अर्से तक इस देश को हिन्द के नाम से तथा इसके वासियों को हिन्दी के नाम से ही पुकारा जाता रहा है. सुप्रसिद्ध कवि इकबाल की निम्नलिखित पंक्ति भी इस बात का साक्षात प्रमाण है:-

**'हिन्दी है हम, वतन है हिन्दोस्तां हमारा'**

इसके अतिरिक्त रूस और चीन के पूर्व प्रधानमंत्री बुल्गानीयन और एन.लाई पहली बार जब स्वतंत्र भारत में पधारे थे तो उनके स्वागत और सम्मान में क्रमशः निम्न नारे लगाये गये थे:-

रूसी-हिन्दी भाई-भाई
चीनी-हिन्दी भाई-भाई

अठारहवीं शताब्दी तक दक्खिनी को दक्षिण में राजाश्रय प्राप्त होता रहा है जिसके कारण इसमें अनेक ग्रंथ लिखे गये. इसी भाषा में लिखी वन्दा नवाज की रचना 'मिराजुल आशिकीन' खड़ी बोली हिन्दी की पहली प्रामाणिक कृति मानी जाती है. मुस्लिम शासन होने के कारण दक्खिनी फ़ारसी लिपि में लिखी जाती थी और इसी से उर्दू का जन्म हुआ. दक्खिनी के अन्तिम कवि वली को ही उर्दू का प्रथम कवि माना जाता है.

भारत को इण्डिया कहे जाने के बारे में ऐसी धारणा है कि ग्रीक निवासियों के यहां आने पर उन्होंने इस देश को इन्दिका शब्द से, यहाँ के निवासियों को इन्दोई शब्द से और यहाँ की भाषा को इन्दोम के नाम से अभिहित किया. यही इन्दिका शब्द आगे चलकर लैटिन में इन्डिया पड़ गया.

यों तो हिन्दी का कुछ रूप आठवीं शताब्दी में भी देखने को मिलता है किन्तु सब मिलाकर इसका प्रतिशत इतना कम है कि १०००ईसापूर्व हिन्दी का उद्‌भव माना ही नहीं जा सकता. साहित्य में भाषा का प्रयोग उसके जन्म से नहीं माना जाता बल्कि भाषा का कुछ रूप निखर जाने पर, उसके बहु स्वीकृत हो जाने पर तथा उसको व्याकरण के नियमबद्ध हो जाने पर ही साहित्यकार उसे अपनी अभिव्यक्ति का माध्यम बनाता हैं. इसीलिये लिखने व पढ़ने में इसका प्रयोग प्रमुखतया पृथ्वीराज के समय से ही अर्थात ११वीं शताब्दी के आसपास ही माना जाता है और इतिहासकारों ने भी तो चन्द्र वरदाई को ही हिन्दी का आदि कवि माना है.

एक प्रादेशिक भाषा की हैसियत से लेकर जन भाषा, राष्ट्रभाषा, सम्पर्क भाषा और फिर भारत की राजभाषा

बनने में इसे कई शताब्दियाँ लगी हैं. यदि यह राजभाषा बनी भी है तो इसके पीछे एक त्याग का इतिहास है. भारत के हृदय स्थल की भाषा होने के कारण तथा अपने साथ कई बोलियों और उप भाषाओं को साथ लिये यह विशाल भू-भाग में फलने-फूलने वाली हिन्दी राजनीतिक, सांस्कृतिक और धार्मिक क्षेत्रों में भी भारत के लगभग सभी प्रदेशों से किसी न किसी रूप मे बराबर जुड़ी रही है. राष्ट्रीय आन्दोलन में तो हिन्दी के प्रति जो राष्ट्रीय चेतना प्रस्फुटित हुई उसके लिये राष्ट्र सदैव उसका ऋणि रहेगा.

विगत ४५०वर्षो में भारत के शासन तंत्र की भाषा में तीन बार आमूल परिवर्तन हुए हैं. पहला परिवर्तन तो मुसलमानों के शासनकाल में हुआ जब फ़ारसी राजकाज़ की भाषा थी. मुगल शासन के बाद जब ब्रिटिश सत्ता कायम हुई तो फ़ारसी का स्थान अंग्रेजी ने ले लिया. अगस्त १६४७ में भारत के स्वतंत्र होने पर समय-चक्र एक बार फिर घूमा और १४ सितम्बर १६४६ को श्री कन्हैया लाल मणिक लाल मुंशी और गोपाल स्वामी आयंगर द्वारा प्रस्तुत किये गये प्रस्ताव पर स्वतंत्र भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ० राजेन्द्र प्रसाद जी की अध्यक्षता में संविधान सभा ने गहन विचार-मनन के बाद निर्णय लिया कि देवनागरी लिपि में लिखी जाने वाली हिन्दी ही भारतीय संघ की राजभाषा होगी. निःसन्देह संविधान सभा ने हिन्दी को राजभाषा का दर्जा प्रदान करके एक सराहनीय काम किया है. दक्खिनी, गूज़री, हिन्दुई, खड़ी बोली, जुबान-ई-हिन्द, हिन्दुस्तानी, आर्यभाषा और नागरी हिन्दी आदि विभिन्न नामों से पुकारी जाने वाली और समय-समय पर अनेक उलझनों भरे सोपान पार करती चली आने वाली इस हिन्दी को अपनी इस विकास अवस्था तक पहुंचने के लिये सहस्त्रों वर्षो की सुदीर्घ अवधि लगी है. उपरोक्त विवादों और समस्याओं का सामना करती हुई यह उत्थान और पतन की अनेक अवस्थाओं में से गुजरी है.

> भारत के स्वतंत्र होने पर १४ सितम्बर १६४६ को श्री कन्हैया लाल मणिक लाल मुंशी और गोपाल स्वामी आयंगर के प्रस्ताव पर डॉ० राजेन्द्र प्रसाद जी की अध्यक्षता में गहन मनन के बाद निर्णय लिया कि देवनागरी लिपि में लिखी जाने वाली हिन्दी ही भारतीय संघ की राजभाषा होगी.
>
> आज शिक्षित वर्ग का यह ख्याल है कि अच्छी नौकरियाँ, अच्छा सम्मान और फलदायक कामकाज केवल अंग्रेजी में ही मिल सकता है. इसलिए वे अपने बच्चों को अंग्रेजी की घुट्टी बचपन से ही पिलाने लगते हैं.

आज शिक्षित और खाते-पीते वर्ग का यह ख्याल है कि अच्छी नौकरियाँ, अच्छा सम्मान और फलदायक कामकाज केवल अंग्रेजी की ही मुट्ठी में है तो फिर क्यों न हम अंग्रेजी पढ़ाकर अपने बच्चों की नींव को पुख्ता करें और इसी विचार से घुट्टी में ही वे उन्हें अंग्रेजी पिलाना शुरु कर देते हैं. इस प्रकार सभी पढ़े-लिखे परिवारों के बौद्धिक क्षितिज से हिन्दी बहिष्कृत होती चली जाती है और उसके लिये यह ज्ञान-विकास की भाषा न रहकर घर और बाजार की काम चलाऊ बोली बनकर रह जाती है.

न केवल महानगरों में बल्कि हर नगर की दीवारें और चौराहे अंग्रेजी होर्डिगों एवं इश्तिहारों से पटे हुए देखे जा सकते हैं. भारतीय भाषाएँ भी आज अंग्रेजी शब्दों को बघारती देखी गई हैं. जिनमें हिन्दी ही सबसे आगे हैं. उदाहरण निम्नानुसार हैः-मैं मार्निग में फ्री नहीं हूं. प्लीज यदि पौसिवल हो तो इवनिंग का ही प्रोग्राम बेटर रहेगा.'

टी.वी. और रेडियो द्वारा परोसी जा रही भाषा ने तो हिन्दी को चौपट ही करके रख दिया है. इन कार्यक्रमों में वाक्य हिन्दी और अंग्रेजी के बीच छलांग लगाते रहते हैं. जहाँ तक तमिल नेताओं के विरोध का प्रश्न है वह विशुद्ध रूप से राजनैतिक ही है. शायद हम यह भूल बैठे हैं कि राजनीति मानव को तोड़ती है जबकि राजभाषा जोड़ती है. राजनीति तो भाषा का उतना ही प्रयोग करती है जितना कि उसे अपने स्वार्थ लाभ के लिये जरूरी है. इसके बावजूद भी वहाँ प्रायः सभी बच्चे हिन्दी लिख पढ़ रहे हैं. आन्ध्र प्रदेश, केरल और कर्नाटक में भी हिन्दी का इतना अधिक विरोध नहीं हैं क्योंकि वे जानते हैं कि उत्तर में जन्मी हिन्दी सयानी तो दक्षिणी भारत में हुई हैं. वे मानते हैं कि भारतीय भाषा परिवार की बड़ी बहन तो हिन्दी ही हैं. केरल में तो शोध के क्षेत्र में हिन्दी ने अंग्रेजी को भी मात कर दिया है. वहां मलयालम में जितने लोगों ने पी.एच.डी की है, उससे दुगुने लोगों ने हिन्दी में पी.एच.डी. की है. यदि ध्यानपूर्वक देखा जाये तो हिन्दी को राजभाषा का सम्मानजनक दर्जा दिलाने में अहिन्दी भाषियों का ही प्रमुख हाथ रहा है.

इतिहास इस बात का सैदव साक्षी

रहेगा कि जनाश्रय के साथ-साथ सभी धर्मावलम्बी लोगों का भी इसे पूरा सहयोग प्राप्त हुआ है. इसकी परम्परा में सूर और तुलसी के साथ-साथ गालीब और मीर भी हुए हैं. इसलिये वह किसी एक धर्म व जाति की बपौती नहीं रही है. जो प्रतिष्ठित स्थान अब अंग्रेजी हथियाए हुए है, न्यायिक दृष्टि से हिन्दी ही उसकी वास्तविक अधिकारिणी है. हिन्दी को उसका उचित स्थान मिलने में जितना विलम्ब होगा उतना ही वह देश के लिये अहितकारी है. राजभाषा का प्रयोग न करना तो राष्ट्र का गला घोंटने के समान है. वास्तव में अंग्रेजी तो विदेशी उपज है जबकि हिन्दी यहाँ की महक है. अंग्रेजी के प्रयोग से भले ही व्यक्ति का सम्मान हो जाये, पर राष्ट्र का नहीं. इतनी सक्षम और समृद्ध भाषा की क्षमता को जान-बूझ कर नजर अन्दाज करना या उस पर प्रश्न चिह्न लगाना न्यायोचित नहीं है. यदि वह पूजा की वस्तु नहीं बन सकती तो कम से कम उसे बरतने का अनिवार्य माध्यम ही बना लीजिये.

पहले नम्बर की विश्व भाषा चीनी मन्दारिन को जैसे अन्य चीनी भाषियों के विरोध का सामना करना पड़ा है वैसे ही दूसरे नम्बर की विश्व भाषा हिन्दी भी अनेक भारतीयों का विरोध सहन कर रही है. पर जैसे हमारी सभी भारतीय भाषाएँ अंग्रेजी से पद्दलित है वैसे चीनी भाषा को किसी भी पराई भाषा से अपमानित नही होना पड़ा है. यद्यपि हम अच्छी तरह जानते हैं कि इग्लैड में भी अंग्रेजी के साथ ही फ्रेंच, चीनी, उर्दू, गुजराती, तमिल और हिन्दी जैसी दर्जनों भाषाएँ प्रचलित हैं, पर उन्हें अपनी भाषा को छोड़ अन्य विदेशी भाषाओं को सीखने में कोई रुचि नहीं. जापान में कहीं भी अंग्रेजी नहीं है. आवश्यकतानुसार उन्हें भी अंग्रेजी सीखने का प्रशिक्षण इंग्लैंड आदि देशों में जाकर लेना पड़ता है. क्या रुसी जनता अंग्रेजी बोलती है? क्या चीन के लोग फ्रेंच को अपनी भाषा मानते हैं? क्या मिश्र के लोग जर्मन भाषा समझते हैं? उत्तर होगा 'नहीं?'

संविधान के अनुसार हम अपने राष्ट्र ध्वज और राष्ट्रगान को जो सम्मान देते हैं उसी सम्मान की अधिकारिणी जननी के समान हमारी यह हिन्दी भी है. भारतीय इतिहास में कोई भी जनभाषा, राजभाषा नहीं हुई है क्योंकि एक राजभाषा जिसे बोलने और समझने वाले साक्षर से ज्यादा निरक्षर हैं, वह राजभाषा के रूप में प्रतिष्ठित हो, निःसंदेह बड़ी आश्चर्यजनक सी लगती है. आजादी के पहले यह राष्ट्रभाषा थी, आज राजभाषा है और इससे भी आगे यह जनभाषा है. राष्ट्रीय एकता के लिए सभी क्षेत्रीय भाषाओं ने मिल-जुलकर इसे समृद्ध करते हुए ही राजभाषा का तख्त और ताज प्रदान किया है. विस्तृत नदियों, ऊंचे पर्वतों और दुर्गम वनों को लांघती हुई यह दूरवर्ती अपनी बहनों से निकटतम सम्बन्ध ा रखती है. अष्टम अनुसूची में वर्णित भाषाओं के अतिरिक्त गोवा और सिक्किम की भाषाएं कोंकणी, नेपाल तथा मणिपुरी के अनुसूचित हो जाने से निर्दिष्ट सभी २१ भारतीय भाषाओं की यह बड़ी बहन अपनी इन सभी छोटी बहनों से समान स्नेह रखती है.

जब महाराष्ट्र का आम और कश्मीरी सेव जैसे फल भी दूसरी मिट्टी में फलने-फूलने से इनकार कर देते हैं, तो फिर हम क्यों विदेशी भाषा को अपनाने पर तुले हैं. यह सही है कि सरकारी हिन्दी कुछ क्लिष्ट और बोझिल भाषा है और इसीलिए हमारे कुछ अंग्रेजीदाओं ने हिन्दी को अंग्रेजी की स्टेपनी बना रखा है. इसका यह अर्थ नहीं कि हिन्दी के दिग्विजय का रथ उनके ही रोके रुका हुआ है. वे और कारण हैं जिन्होंने कि हिन्दी के रथ के पहियों के नीचे कुछ विशाल पत्थर रख दिये हैं जिनका कि यहां उल्लेख करना अनिवार्य नहीं है.

विश्व में कोई भी ऐसा देश नहीं जिसे अपनी भाषा के लिये इतने बड़े पैमाने पर आन्दोलन करना पड़ा. यहाँ अपनी ही भाषा में काम सिखाने हेतु अलग से बजट बनाना पड़ता है. एक सर्वेक्षण के अनुसार मात्र हिन्दी दिवस/पखवाड़े पर ही प्रतिवर्ष २० करोड़ औसतन खर्चा आता है. क्या अनोखी बात है कि अपनी भाषा में भी काम करने के लिए हिन्दी दिवस के दिन हमें लोगों को प्रतिवर्ष याद दिलाना पड़ता है. आज से ही हम हिन्दी में काम करना शुरु कर दें तो हिन्दी के प्रति हमारे सम्मान की यह पहली सीढ़ी होगी और पहली ही सीढ़ी पर जब पाँव रख दिया जाये तो हिन्दी के प्रति अपनत्व की पूरी सीढ़ी एक न एक दिन अवश्य चढ़ी जा सकेगी.

## हिन्दी : नारे

✍एक लक्ष्य, बस एक ही काम,
गूँजे हिन्दी चारों धाम।
✍जितनी जाति, उतनी भाषा,
लेकिन हिन्दी सबकी भाषा।
✍हिन्दी हो सबकी पहचान,
मिलकर बोलो एक जबान।
✍एकता के लिए हिन्दी जरूरी,
बिना इसके प्रगति अधूरी।
✍संविधान का रहे सम्मान,
हिन्दी सीखें हम इन्सान।
✍जय हिन्द, जय हिन्दी,
अंग्रेजी है कलंक की बिन्दी।

**-दर्शन सिंह रावत**,उदयपुर, राजस्थान

मुद्दा

# हिन्दी बनाम राष्ट्रीय एकता

✍ अशोक कुमार शेरी
मेढ़क, आ.प्र.

**भाषा** राष्ट्रीय एकता की प्रमुख संवाहक होती है. भारतीय संविधान में देवनागरी लिपि में हिन्दी को संघ की सरकारी भाषा अर्थात राजकाज की भाषा का दर्जा दिया गया है. इस तरह हिन्दी को जो राष्ट्रभाषा का वास्तविक गौरव मिलना चाहिये था वह केवल सरकारी प्रयोजन तक सीमित हो गयी है, इसमें अंग्रेजी की बराबर की हिस्सेदारी निश्चित कर दी गयी हैं. परिणाम यह हुआ कि राष्ट्रीय एकता के संवर्धन और उसको पुष्ट करने में हिन्दी वह ऐतिहासिक भूमिका नहीं निभा पायी जो वह पिछली कई शताब्दियों से निभाती आ रही थी, अपनी संवैधानिक सीमाओं में रहते हुए हिन्दी, कहीं उत्तर-दक्षिण की भाषायी राजनीति का शिकार बनी तो कहीं अंग्रेजी के वर्चस्व के कारण उपेक्षित रही. उन तमाम विसंगतियों में, जिनके कारण हमें राष्ट्रीय एकता के संकट का सामना करना पड़ रहा है. एक विसंगति राष्ट्रभाषा के संदर्भ में भी है. इस विसंगति के कारण ही हिन्दी जिस प्रभावी रूप में राष्ट्रीय एकता की संवाहक बन सकती थी, उस रूप में न बन सकी. यदि हमारा विश्वास है तो हमें एक राष्ट्र और एक राष्ट्रभाषा की भावना को स्वीकार करना होगा.

एक राष्ट्रीयता के समान राष्ट्रभाषा एक होनी चाहिए, उसे उत्तर या दक्षिण की भाषा कहना राष्ट्रीयता का अपमान करना है. वस्तुतः हिन्दी को राजभाषा घोषित करते समय संविधान निर्माताओं ने उसके साथ जो विकल्प सुनिश्चित किये, वही आज हिन्दी के विकास मार्ग में बाधक सिद्ध हो रहे हैं. इन विकल्पों ने हिन्दी को राष्ट्रभाषा तो दूर राजभाषा का भी पूर्ण दायित्व नहीं वहन करने दिया है. ये विकल्प भाषायी राष्ट्रीय एकता में बाधक हैं.

हमने एक राष्ट्रीय चिह्न एक राष्ट्रीय प्रतीक, एक राष्ट्रीय ध्वज और एक राष्ट्रीय गान को अपनाया तो किन स्वार्थों और किन विवशताओं के कारण हम एक राष्ट्रभाषा नहीं अपना सके. स्वतन्त्रता आंदोलन के समय हिन्दी ने देश को एक किया था. स्वतंत्रता के बाद वही एक वैकल्पिक व्यवस्था और राज्यों की प्रयोग करने की इच्छा के नाम पर सीमित हो गयी. यह हमारी नीतियों की ही कमजोरी है कि 'आल इण्डिया रेडियो' को 'आकाशवाणी' कहना कुछ राज्यों का हिन्दी थोपने का षडयन्त्र लगने लगता है.

अतएव राष्ट्रभाषा के सम्बंध में आज स्पष्ट और व्यावहारिक नीति की आवश्यकता है. राष्ट्रीय स्तर के कामकाज के लिये हिन्दी को बिना किसी विकल्प के स्वतंत्र और अनिवार्य मान्यता मिलनी चाहिए. राज्य स्तर पर प्रादेशिक भाषाओं का स्थान सुनिश्चित होना चाहिये. हिन्दी और प्रादेशिक भाषाओं के समन्वित विकास अंग्रेजी का वर्चस्व कम होगा. साथ ही हम अपनी संस्कृति से अधिक सुदृढ़ ढंग से जुड़ सकेगें.

**जय हिन्दी, जय देवनागरी।।**

❑

# राष्ट्रभाषा हिन्दी

**जिसने** आकाश को छू लिया है,
उस हिमालय का है ताज हिन्दी।
कंठ है, सुर है, है साज हिन्दी,
है करोड़ों की आवाज हिन्दी।

खेत की मेढ़ पर ये चली है,
तब कहीं जाके माँ सी ढली है।
इसकी पहचान हर एक डगर है,
इसकी पहचान हर एक गली है।

तेलगु, कन्नड़, तमिल और मराठी,
उड़िया, मलयालम इसकी हैं बहना।
देशकी एकता, 'भाईचारा'
इसका सौदर्य, इसका है गहना।

इसने लाखों दिलों को मिलाया,
इसने गांवों के गीतों को गाया।
इसने पनघट के प्यासे पिया को,
देश का दर्द पीना सिखाया।

इसने सपने संजोए हजारों,
बनकर भारत के माथे की बिन्दी।
यूँ तो रानी-महारानी है ये,
फिर भी बेबस है लाचार हिन्दी।

कितने सागर बहाये गये पर,
होठ सूखे हैं प्यासी है हिन्दी।
जिसके घूंघट में तारे टंके हों,
उस दुलहन की उदासी है हिन्दी।

राष्ट्र की चेतना को समेटे,
बह रही है निरंतर ये गंगा।
इसकी ताकत की पहचान बनकर,
मुस्कराता रहेगा तिरंगा।

✍ **ज्ञानचन्द 'मर्मज्ञ'**
बेंगलौर, कर्नाटक

# १४ सितम्बर-हिन्दी दिवस

✍ **भैरूलाल नामा,**
बाड़मेर, राजस्थान

**जन-मन** की है भाषा हिन्दी, आमोद-प्रमोद की भाषा हिन्दी, तुलसी कबीर की वाणी हिन्दी. बंगला, तमिल, गुजराती, मराठी भाषाओं की भाषा है हिन्दी. हिन्दी भारत की भाषा है.

राष्ट्र में जन-चेतना के माध्यम से एक ऐसा वातावरण निर्माण करें ताकि भावी पीढ़ी ज्यादा से ज्यादा लिखने और बोलने में हिन्दी का प्रयोग करें. हमारे देश विश्व में महान देश है. उसी भाँति विश्व की श्रेष्ठ भाषा के रूप में हिन्दी का मान बढ़ाएँ. सरकार हिन्दी वर्ष की घोषणा करें और वर्ष पर्यन्त हिन्दी को प्रोत्साहन देने हेतु विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन करें. हिन्दी को प्रचारित कर अपने स्वयं को गौरवान्वित महसूस करें, अंग्रेजी की दासता को त्याग करें. शिक्षण संस्थाओं में छात्रों को हिन्दी का उचित ज्ञान करावें. इसके लिए शुरुआत स्वयं से करें. देश में सभी नागरिक अपना सारा काम-काज हिन्दी में करें.

हिन्दी साहित्य और शब्दकोष को बढ़ावा दें. कानून में संशोधन कर हिन्दी को राष्ट्रभाषा का सही दर्जा दिलाकर इसको सम्मानित कराएँ.

देश में ऐसे कई सरकारी और गैर सरकारी कार्यालय है जहां अधिकतर सारा काम-काज अंग्रेजी में होता है. इसके अलावा ऐसे कई विद्यालय एवं विश्वविद्यालय है जहां हिन्दी पर प्रतिबंध लगा हुआ हैं. क्योंकि वे विद्यालय अंग्रेजी माध्यम के हैं. ये पाबन्दी हटाई जाये और सभी कार्यालयों में सारा काम हिन्दी में किया जाये ऐसे आदेश प्रचारित किये जाये सम्पूर्ण देश में चाहे केन्द्र सरकार हो या राज्य सरकार सभी हिन्दी को राष्ट्रभाषा का विशेष दर्जा देकर सारा काम-काज हिन्दी में करना चाहियें.

जब जन प्रतिनिधि व नेता लोग भाषण देते हैं तो बीच-बीच में अंग्रेजी शब्द बोल देते हैं लेकिन जब अंग्रेजी में भाषण देते हैं तो बीच में कोई हिन्दी शब्द नहीं बोलते.

हिन्दी के प्रोत्साहन हेतु प्रशासन समय-समय पर ऐसे आदेश प्रसारित करें ताकि वे सभी सरकारी कार्यालय अपना कार्य हिन्दी में करें ताकि आम नागरिक भी हिन्दी का गौरव बढ़ा सकें.

## भारत के संविधान के अनुच्छेद ३५१ में हिन्दी भाषा के विकास के लिए निदेश

**संघ** का कर्त्तव्य होगा कि वह हिन्दी भाषा के प्रचार-प्रसार को बढ़ावा दे; इसे इस तरह विकसित करे कि यह भारत की सामासिक संस्कृति के समस्त तत्त्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम बन सके तथा आठवीं अनुसूची में विनिर्दिष्ट भारत की अन्य भाषाओं और हिन्दुस्तानी में प्रयुक्त रूपों, शैलियों एवं अभिव्यक्तियों व इसकी (हिन्दी की) प्रकृति को बिना छेड़े तथा इसके शब्दभाण्डार के लिए जहाँ कहीं आवश्यक या वांछनीय हो, मुख्यतः संस्कृत से और गौणतः अन्य भाषाओं से शब्द ग्रहण करते एवं अपनाते हुए इसकी समृद्धि सुनिश्चित करे. (भाग-१७, अध्याय-४)

## DIRECTIVE FOR DEVELOPMENT OF THE HINDI LANGUAGE IN THE ARTICLE 351 OF THE CONSTITUTION OF INDIA

**It** shall be the duty of the Union to promote the spread of the Hindi Language, to develop it so that it may serve as a medium of expression for all the elements of the composite culture of India and to secure its enrichment by assimilating without interfering with its genius, the forms, style and expressions used in Hindustani and in the other languages of India specified in the Eighth schedule, and by drawing, wherever necessary or desirable, for its vocabulary, primarily on Sanskrit and secondarily on other languages. **[Part-17, Chapter-4]**

**हिन्दी अनुवादः डॉ० दुर्गाशरण मिश्र,** प्रबंधक (राजभाषा), भा.वि.प्रा., सी.ए.टी.सी, बमरौली, इलाहाबाद

विचारी

# विकुंठ बात

✍ डॉ० दुर्गाशरण मिश्र
प्रबंधक (राजभाषा), भा.वि.प्रा.,
सी.ए.टी.सी, बमरौली, इलाहाबाद
मो०:9005324762

हमारा जीवन अरबों-खरबों का है, पर हम इसे कभी-कभी क्षुद्र चीज के लिए भी सस्ता बना देते हैं. आदमी का यही स्वभाव सबसे विचित्र है. हम अमूल्य होते हुए भी अपना मूल्य भूले रहते हैं. जब तक आदमी को मुकम्मल आदमी बनने में वक्त है, तब तक समझदार को चाहिए कि वह मानव वेश वाले पशुओं से विवेकसम्मत तरीके से पेश आए. यदि थोड़ा-बहुत अपमान झेलना भी पड़े तो वह यह सोचकर झेले कि अभी इसने मानव शरीर धारण किया है या यह अभी आदमी बनने की प्रक्रिया में है. इस पर कुछ लोग कह सकते हैं कि पशु से आदमी बनकर नहीं निबटा जा सकता. पर मेरा कहना है कि पशु के साथ पशु भी तो नहीं बना जा सकता. तब आप कहेंगे कि मानव वेशधारी पशुओं को आदमी की तरह घूमने की स्वतंत्रता नहीं होनी चाहिए. इस पर मैं यह कहूँ कि यदि आदमी का रूप धरकर भी कोई आदमी नहीं है, तो उसके दोषी प्रकारान्तर से हम भी हैं. आप पूछेंगें वह कैसे? वह ऐसे कि उसे आदमी बनने की प्रक्रिया में, हमने उसे किसी प्रकार का सहयोग नहीं दिया. यदि सभ्य/उन्नत समाज अपनी जिम्मेदारी निभाने में कोताही करता है, तो दुष्परिणामों को झेलने के लिए उसे स्वयं को तैयार रखना ही होगा.

## दो

कभी हम सोचते हैं कि हम क्यों जी रहे हैं? किस वास्ते जी रहे हैं? यदि जानवर यह सब नहीं सोचते, तो क्या हुआ? हम जानवर तो नहीं. यदि व्यापक अर्थ में हम सामाजिक जानवर हैं भी तो, सभ्य समाज में रहने तक, हम तथाकथित जानवरों जैसा व्यवहार भी तो नहीं कर सकते. बेचारे जानवरों की दुनिया तो अपने पेट भरने तक सीमित होती है. कभी वे यह नहीं सोच पाते कि आखिर पेट किस उद्देश्य से भरा जा रहा है, मरने तक जीवित रहने के लिए या अपने साथ-साथ पशु समाज को भी जिन्दा रखने के लिए.

यह सच है कि कोई जल्दी मरना नहीं चाहता. साथ ही यह भी सच है कि वह मरकर भी इस दुनिया का रहे (कुछ अपवादों को छोड़कर), वैसा कुछ काम भी नहीं करना चाहता. क्यों न हम आज से, इसी क्षण से, थोड़ा दूसरों के लिए भी जीना शुरू कर दें. सबको हम यह एहसास कराएँ कि 'मनुष्यता' शब्द निरर्थक नहीं. 'मानवता' केवल शब्दकोशों में शोभायमान रहने के लिए ही नहीं बनी है. यदि हमें खुद को जानवरों से श्रेष्ठ सिद्ध करना है, तो जाने-अनजाने हममें आ घुसी पशुता से छुटकारा पाना ही होगा. अच्छा, आप क्या सोचते/सोचती हैं?

## तीन

जीवन में रोमांच/पुलक का अपना महत्त्व है. अगर रोमांच, स्वयं के अथक प्रयास का परिणाम हो तो कहना ही क्या! निराशा के वातावरण में भी, जीवन में रोमांच को उतार लाना या उसे कायम रखना, केवल वीरों के वश में होता है. पर कभी-कभी निराशा ऐसे आत्मघाती रूप में प्रकट होती है कि कुछ क्षण के लिए वीर भी विचलित हो जाते हैं. पर यह निर्विवाद है कि इस पृथ्वी पर वीर ही संतुलित रूप से अपने कदम जमाए रख सकते हैं. यहाँ वीर से मेरा मतलब यह नहीं, जो शरीर से बलवान हो. जिसमें आत्मबल है, वही वीर की परिभाषा के दायरे में आता है.

सच! आज त्रस्त धरती को वीरों की सख्त जरूरत है. ऐसे महावीर जो सर्वस्व त्याग करने को तत्पर हों. मानवता की मान मर्यादा की रक्षा करने में जो अपना सच्चा सुख मानते हों. पर यहाँ प्रश्न उठता है कि क्या वक्त को, वीरों की प्रतीक्षा में अपना समय बर्बाद करना होगा या वे आसमान से टपकेंगें. पर साथ में यह भी है कि जो चीज हमारे पास पहले से उपलब्ध हो, तो किसी का मुखापेक्षी बनना भी उचित नहीं. अगर हम स्वयं के भीतर झाँककर देखें, तो हमें एक वीर बाहर आने के लिए मचलता दिखेगा. यह हम पर है कि इस वीर को नपुंसकता की बेड़ियों में जकड़े रखना चाहते हैं या इसे आजादकर जन कल्याण के महामार्ग पर चलने के लिए स्वतंत्र छोड़ते हैं.

# स्व० बाला सिंह पाल

## ■ भारत-तिब्बत व्यापार के अग्रदूत

✍ शम्भु प्रसाद भट्ट
'स्नेहिल', चमोली, उत्तराखंड

शिक्षा, संस्कृति, सभ्यता, रीति-रिवाज तथा वाणिज्यिक व्यापार आदि किसी भी स्थान व क्षेत्र विशेष के विकास एवं पहिचान के मुख्य बिन्दु माने जाते हैं. भारत-तिब्बत सीमा व्यापार में स्व. बाला सिंह पाल जी के योगदान चमोली जिले के लिए गौरवपूर्ण हैं. बाला सिंह पाल का जन्म उत्तराखण्ड राज्य के चमोली जिले के बाम्पा नामक गांव में सन् १९०० में हुआ था. इनके पिता स्व. अमर सिंह पाल एवं माता स्व. मंगसिरी देवी थी. अपने परिवार में ज्येष्ठ पुत्र होने के कारण वे जन्म से ही अत्यधिक संवेदनशीलता के साथ-साथ पूर्ण उत्तरदायी प्रवृत्ति के थे, भ्रमणशील रहकर अनेकानेक स्थानों को देखने की इनकी मुख्य आदत रही, इनके आय का मुख्य स्रोत व्यापार ही था. इस कारण इन्होंने व्यापार को विस्तृत रूप देने व लम्बे क्षेत्र तक विस्तारित करने के लिए कई महत्त्वपूर्ण कदम उठाए.

श्री बाला सिंह पाल ने विद्यालयीय शिक्षा मात्र कक्षा-दो तक ही प्राप्त की, इनकी अल्पशिक्षा का कारण पारिवारिक समस्याओं की जटिलता व अध्ययन केन्द्रों की अनुपलब्धता या विद्यालय निकट न होना रहा है, लेकिन इन्होंने अल्पशिक्षा को अपने व्यापार में कहीं भी आड़े आने नहीं दिया. अनुभवों व कार्यक्षमता के आधार पर इनके द्वारा जीवन में सफलता की ऊंचाइयां छूने का पूर्ण प्रयास किया गया.

इन्होंने अपने मित्रों के सहयोग से व्यापारिक विकास को सफलता की ओर अग्रसर करने में निरन्तर प्रयास किया. क्षेत्र में व्यापारिक विकास को सफलता की ओर अग्रसर करने में निरन्तर प्रयास किया. क्षेत्र में व्यापारिक गतिविधि को जारी रखने में इन्हें इनके परम मित्र श्री मानसिंह बम्पाल, माधो सिंह पाल, दलीप सिंह पाल, मंगल सिंह पाल तथा रतन सिंह पाल ने बहुत सहयोग दिया. ये लोग व्यापार वृद्धि के साथ-साथ अन्य क्षेत्रीय विकास के चिन्तन हेतु अधिकतर देर रात तक साथ-साथ बैठकर विचार-मंथन करते रहते थे. यही कारण रहा कि उनके समय में व्यापार की निरंतर अपेक्षानुसार वृद्धि होती रही.

तत्कालीन उत्तर प्रदेश सरकार के विभिन्न विभागों/मंत्रालयों में मंत्री पद को सुशोभित करने वाले चमोली के विधायक श्री नरेन्द्र सिंह भण्डारी जी से बाल सिंह पाल के अत्यंत निकट सम्बंध थे. कहा जाता है कि इन्हीं के सहयोग से श्री पाल जी द्वारा जोशीमठ क्षेत्र को विशेष दर्जा मिला था. पं. जवाहर लाल नेहरू, श्रीमती इन्दिरा गांधी जी से भी इनके अच्छे सम्बंध रहे, जिससे अनेकों क्षेत्रीय समस्याओं के निराकरण में काफी सुविधायें रहीं.

ग्यारह भाई-बहिनों के मध्य परिवार का ज्येष्ठतम सदस्य होने के कारण माता-पिता की रुग्णावस्था व वृद्धावस्था में इनके लालन-पालन तथा आवश्यक सुख-सुविधा के साथ-साथ उन्हें भविष्य में यथोचित स्थान दिलाने के प्रयास में इनके पास नाम मात्र के कृषि व्यवसाय के अलावा बकरी पालन ही एक मात्र आय का स्रोत था, जिसे विकसित करने के लिए इन्होंने वो हर सम्भव प्रयास किये जिससे कि पारिवारिक स्थिति सुदृढ़ हो सके तथा छोटे भाई-बहिनों के भविष्य का अपेक्षित विकास हो.

श्री बालासिंह पाल अपने बालपन से ही व्यापारिक गतिविधियों में निरंतर सक्रिय रहे. ये तत्कालीन भारत-तिब्बत अन्तरराष्ट्रीय व्यापार मंडी तिब्बत के गाढ़तोक नामक स्थान में जाकर कई दिनों तक प्रवास करते रहते थे. इन्होंने बाद में अपने प्रवासीय विश्राम हेतु यहीं गाढ़तोक में अपना आवासीय मकान बनवाया. गाढ़तोक अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार मंडी में चीन, नेपाल, तिब्बत सहित भारत के हिमाचल प्रदेश, लद्दाख, मुनस्यारी, जोशीमठ, नीती-माणा तथा व्यास-चौरास के ऊन व्यापारी आकर अपने-अपने उत्पादन की प्रदर्शनी लगाते थे, जिससे उनके व्यापार का विस्तार अपने क्षेत्र के अलावा अन्य देशों में भी हो जाता था. यह व्यापारिक क्रम सम्बन्धित क्षेत्रों में १९६० तक जारी रहा. चीन द्वारा तिब्बत की सम्प्रभुता को पूर्णतः अपने अधीन कर लेने पर यह व्यापार मण्डी धीरे-धीरे बन्द हो गयी. १९६२ में भारत-चीन युद्ध होने के कारण इस अंतर्राष्ट्रीय व्यापार को तो पूर्ण विराम ही लग गया.

व्यापार को निरन्तर जारी रखने की चाहत ने ही गढ़वाल के गौचर में व्यापारिक मंडी स्थापित की. जहां इन्होंने अपने सहयोगियों की सहायता से प्रति वर्ष नवम्बर माह में एक विशाल व्यापारिक मेले का प्रचलन प्रारम्भ किया. इस मेले में स्थानीय स्तर पर ऊन से उत्पादित वस्तुओं के साथ-साथ क्षेत्रीय स्तर पर कृषि भूमि से तैयार साक-सब्जी, फल व विभिन्न कृषि

बाल कोना

# हिन्दी का अनादर क्यों हो रहा है?

✍ कौशतुभ तिवारी
कक्षाः ७ जन्म तिथिः ०६.०६.२०००
पिता का नामः श्री रविन्द्र कुमार तिवारी
माता का नामः डॉ० विमला तिवारी
पताः ३७/१, लेबर कॉलोनी, नैनी, इलाहाबाद, उ०प्र०
स्कूलः निशा ज्योति संस्कार भारती विद्यालय, नैनी, इलाहाबाद

हिन्दी हमारी मातृभाषा है. हमारी संस्कृति जिसमें हिन्दी सर्वव्यापक है. संस्कृत, हिन्दी जैसी भाषाएँ जो पूरे विश्व में प्रसिद्ध है. फिर भी लगता है जैसे हिन्दी पूरे विश्व में अब अपनी प्रसिद्धि खो रही है. हिन्दी से बढ़कर अंग्रेजी पर ज्यादा ध्यान दिया जा रहा है. पूरे भारत में बहुत ही अधिक संख्या में अंग्रेजी माध्यम के विद्यालय खुल गए हैं. ऐसी कोई रोक नहीं है कि आप अंग्रेजी पर ध्यान न दें. लेकिन अपनी मातृभाषा को आप कैसे भूल सकते हैं. भारतवासी हिन्दी को अपना ही नहीं रहे हैं. जिस प्रकार अपने देश में अंग्रेजी बोली जा रही है उससे यह प्रतीत होता है कि अंग्रेजी हमारी मातृभाषा है. हिन्दी को फिर से लोगों के तन-मन में बसाना होगा. कौन मना करता है कि अंग्रेजी मत पढ़ो बस यह मत भूलों की तुम भारतवासी हो. आज के विद्यार्थी पढ़ाई के नाम पर आत्मदाह कर लेते हैं. कभी धन की कमी, कभी शिक्षा का दबाव तो कभी आने वाले समय के बारे में सोचने से दबाब पड़ता है. पढ़ाई में सबसे बड़ी समस्या अंग्रेजी है. जिसको पढ़ने में ज्यादे दिक्कत होती है. माता-पिता विद्यालय की अच्छी ईमारतें व अंग्रेजी माध्यम देखते हैं. ये नहीं देखते की हमारा बच्चा इसमें उचित शिक्षा पायेगा या नहीं? मैं बहुत दुख महसूस करता हूं जब अंग्रेजी माध्यम विद्यालय में पढ़ने वाला बच्चा दूसरे हिन्दी माध्यम से पढ़ने वाले बच्चे से ये कहता है कि मैं तुमसे पढ़ाई में ज्यादा अच्छा हूँ, क्योंकि मैं अंग्रेजी माध्यम के विद्यालय में पढ़ता हूँ. इस प्रकार हिन्दी का अनादर हो रहा है. बहुत दुखद लगता है कि हिन्दी को भारत भूल रहा है.

उत्पादित अनाज का व्यापार किया जाता था. तब से यह व्यापारिक मेला प्रतिवर्ष नवम्बर माह में आज भी आयोजित किया जाता है. इस मेले में प्रशासनिक स्तर पर गठित मेला समिति का पूर्ण योगदान रहता है.

भोटिया परिवार में जन्में बाला सिंह पाल ने अपनी भोटिया संस्कृति को प्रसारित करने तथा मेला के आयोजन हेतु जन जागरूकता चलाने के लिए अनेक पत्र-पत्रिकाएं छपवाकर जन-जन तक अपनी तथा अपने व्यापार की पहचान बनाई. गौचर मेले में बकरी व उसके ऊन से बनें वस्त्रों, वस्तुओं एवं नमक आदि का व्यापार बड़े पैमाने पर किया जाता था, यहीं नही इस मेले में स्वास्थ्य के लिये अत्यन्त उपयोगी सिद्ध होने वाले महत्वपूर्ण जड़ी-बूटियों का व्यापार भी होता था. वर्तमान में यह मेला स्थानीय उत्पाद का मेला न रहकर औद्योगिक क्षेत्र से उत्पादित वस्तुओं का विशाल औद्योगिक विकास मेला बन गया है, यहां पर अब कल-कारखानों से निर्मित चीजों का ही अधिक व्यापार होता दिखायी देता है. श्री पाल जी धार्मिक प्रवृत्ति के व्यक्ति थे, इस कारण ये गांव व क्षेत्र में कभी-भी आयोजित होने वाले देव-पूजन कार्यक्रम में बढ़-चढ़कर भाग लेते थे.

सन् १९९५ को श्री पाल जी ने इस देह को त्यागकर परम-धाम को गमन किया. उनके भतीजे श्री दयाल सिंह पाल ने बताया कि प्रतिवर्ष की भाँति अगस्त माह में नागपंचमी का पूजन करके लौटते हुए अस्वस्थ होने के कारण कुछ दिनों के पश्चात इनकी अचानक मृत्यु हो गयी. इस प्रकार बाला सिंह पाल के चले जाने से जनपद चमोली की व्यापारिक गतिविधियों का महास्तम्भ इस समाज के बीच से सदा-सदा के लिए बिछुड़ गया.

प्राकृतिक सुन्दरता की अनुपम छटा को अपने में समेटे जोशीमठ तहसील की नीती घाटी व्यापारिक गतिविधियों के साथ-साथ पर्यावरणीय जागरूकता के लिये भी जानी जाती है. श्री बाला सिंह पाल की जन्मस्थली बाम्पा-गमशाली, चमोली के जोशीमठ से नीती मोटर-मार्ग के मध्य उच्च पर्वतीय श्रेणियों के बीच में तपोवन-रेणी-लाता-सुराईथोटा-मलारी के समीप स्थित है. इसी सुन्दरतम घाटी के मध्य लाता-रेणी में जन्मी पली-बढ़ी श्रीमती गौरा देवी ने वन एवं पर्यावरणीय विकास एवं सुरक्षा की जो आवाज बुलन्द की वह सम्पूर्ण भारतवर्ष ही नहीं बल्कि अंतरराष्ट्रीय संस्था संयुक्त राष्ट्र संघ को भी गुँजायमान कर गई.

जन्म दिन पर विशेष

# दानवीर त्याग मूर्ति ऋषीश्वर दधीचि

✍ देवदत्त शर्मा 'दाधीच',
जयपुर, राजस्थान

**जलते जीवन के प्रकाश में,
अपना जीवन तिमिर हटाएँ
उस दधीचि की तपः ज्योति में,
एक एक धर दीप जलावें
धन्य-धन्य ऋषिराज दधीचि,
तुमने जो है त्याग किया।
मनुष्य लोक में जय-जयकार करे,
देवों का उपकार किया।।**

भारत की रत्नगर्भा भूमि अवतारों की भूमि है. यह अपनी आध्यात्मिक व सांस्कृतिक विरासत के लिये सारे संसार में प्रसिद्ध है. यहां पर स्वयं भगवान अवतार लेते हैं. देव भूमि भारत ऋषियों महर्षियों की पुण्य स्थली है. इनके तप, तपस्या, अनुसंधान, त्याग, प्रेम, लोकहित की साधना में ही सर्मपित रहा है. ये संसार के प्राणियों के बारे में ही नहीं अपितु स्वर्ग के देवताओं के हितों के सरक्षक एवं उनकी रक्षा के लिये तैयार रहे. इन्होंने राष्ट्र, देश, समाज, धर्म की रक्षा के लिये अपने बलिदान दिये. इस प्रकार एक विशाल मणीमाला में महर्षि दधीचि का भी स्थान है जिन्होंने विश्व के कल्याण हेतु अपने शरीर का बलिदान किया. मां भारती के अमर पुत्रों की कीर्ति महर्षि दधीचि के पावन स्मरण के बिना अधूरी रह जाती है. अग्नि उपासक, आदर्श के प्रणेता, गार्हस्थ्य धर्म का पालन, त्यागमय जीवन, श्रेष्ठ वैज्ञानिक, अणु शक्ति के ज्ञाता, अग्नि के प्रणेता, शल्य क्रिया के विशेषज्ञ, मधु विधा के प्रकाण्ड विद्वान, माँ शारदा के सच्चे उपासक, शिव भक्त, क्रांतिकारी, विश्व के कल्याण हेतु अपनी अस्थियों का दान करने वाले प्रथम मनुष्य थे. इस प्रकार अनेक गुणों से भरपूर उस महान त्यागी, दानी, प्रातःस्मरणीय महर्षि दधीचि को प्रत्येक क्षण याद करना व उनके आदर्शो को ग्रहण करना ही सच्ची श्रद्धांजलि है. भाद्र शुक्ल अष्टमी को उनका

जन्म हुआ. अर्थवा ऋषि के पुत्र थे, माता का नाम शान्ति था. उनका नाम ब्रह्माजी ने दध्यंग (दधीचि) रखा. इनका विवाह तृणबिन्दु राजा की पुत्री वेदवती के साथ हुआ. वे त्रिवेणी संगम में अर्थव वन में निवास करते थे.

राजा क्षुव से उन्होंने युद्ध किया उसमें क्षत्रिय व ब्राह्मण कौन श्रेष्ठ है का निर्णय हुआ. इनका शरीर युद्ध में विच्छिन्न हो गया. दैत्य गुरू शुक्राचार्य ने मृत संजीवनी विद्या से शरीर पूर्ववत कर दिया. इनसे दधीचि ने महामृत्युंजय मंत्र का ज्ञान सीखा. जनकल्याण में रत रहने वाले देवताओं के वैद्य अश्विनी कुमारों को ब्रह्म ज्ञान दिया. वे राल्य चिकित्सा के ज्ञाता थे. इन्द्र को मालूम पड़ा कि ब्रह्म विद्या का ज्ञान अश्विन कुमारों को दिया जा रहा है तो महर्षि से कहा कि वे यह ज्ञान सिर्फ मेरे को ही देवे. लेकिन दधीचि ने अश्वमुखी को ब्रह्म विद्या का ज्ञान दिया और वे अश्वसिरा कहलाये. जब इन्द्र को इसका पता लगा तो क्रोधित हुये और उनका शिरोच्छेदन कर दिया. उसके बाद अश्विन कुमारों ने महर्षि का सुरक्षित रखा मस्तक पुनः रोपित कर दिया. दैत्य गुरू शुक्राचार्य की प्रेरणा से भगवान विष्णु की आराधना करके ब्रह्म कवच व नारायण कवच धारण किया. जिससे उनका शरीर इच्छा, मरण व वज्र के समान हो गया. इनके शरीर में ब्रह्म तेज विद्यमान था.

दक्ष प्रजापति ने कनखल (हरिद्वार) तीर्थ में विशाल यज्ञ किया उसमें भगवान शंकर को आमंत्रित नहीं किया. महर्षि दधीचि को जब यह मालूम हुआ तो उन्होंने कहा कि भगवान शंकर के बिना कोई यज्ञ निर्विध्न पूरा नहीं होता लेकिन उपस्थित समुदाय में किसी ने भी भयवश दक्ष का विरोध नही किया. तब दधीचि ने अपने क्रान्तिकारी स्वरूप का परिचय दिया और कठोर शब्दों में दक्ष प्रजापति के इस अन्यायपूर्ण कृत्य एवं दुराग्रह की भर्त्सना की एवं यज्ञ का बहिष्कार किया. इसके बाद नैमिषारण्य में गोमती एवं सरस्वती नदी के किनारे अपने धर्मपत्नी वेदवती के साथ तपस्या करने लगे. देवताओं और असुरों के बीच संघर्ष के समय भगवान ब्रह्मा, विष्णु एवं महेश की कृपा से प्राप्त दिव्य अस्त्रों के द्वारा देवताओं ने दानवों को परास्त किया. उसके पश्चात इन शस्त्रों को सुरक्षित रखने के लिए दधीचि के पास गये और उन्हें इन्हें सुरक्षित रखने के लिये उन्होंने तन्त्र-मन्त्र के माध्यम से शस्त्रों को अणु में परिवर्तित कर दिया और इसके लिये दधीचि को अणु शक्ति का प्रथम आविष्कार मानते है.

असुरराज वृत्रासुर का आतंक

बढ़ने लगा. देवताओं को पराजित होना पड़ा. चारों ओर त्राहि-त्राहि मच गयी. सभी भगवान विष्णु के पास गये. तब उन्होंने कहा कि वृत्रासुर के नाश के लिए महर्षि दधीचि के पास जाकर उनकी अस्थियों का वज्र बनाने के लिए याचना करें. सभी देवता इन्द्र के साथ मिलकर दधीचि से प्रार्थना की. असुरराज का वध करने के लिए आपकी अस्थियाँ हमें दान में दीजिये.

ऋषि ने देवताओं को कहा कि यह देह क्षण भंगुर है यदि यह शरीर लोक कल्याण एवं विश्व की रक्षा के लिए काम आता है तो मेरा सौभाग्य है. मैं मेरी अस्थ्यिों का न्यासी हूँ. मुझे ये अस्थियां लेकर वज्र का निर्माण करें. महर्षि की इच्छा थी कि मैं पुण्य भारत के सभी तीर्थो का स्नान करूं.

अतः सभी तीर्थों पर जाने में समय लगेगा तभी देवताओं ने तीर्थो का आह्वान किया. सभी तीर्थ अपने-अपने कमण्डलों में जल भर कर देव कार्य एवं दैत्य दमन में अपने जीवन का बलिदान देने वाले दधीचि का अभिषेक किया. अभिषेक का सारा जल सरस्वती कुण्ड में एकत्र हुआ और मिश्रित हुआ. यह स्थान उत्तर प्रदेश के सीतापुर जिले में है. रेलवे स्टेशन मिश्रित तीर्थ है. वहां से बसें मिलती है. अश्विन कुमारों के सहयोग से देव शिल्पी विश्वकर्मा ने मेरूदण्ड की अस्थियों से वज्र दण्ड का निर्माण किया. उस वज्र से देवराज इन्द्र ने देवताओं के वत्रासुर से युद्ध किया और उसका वध किया और धर्मराज की स्थापना की. महर्षि दधीचि ने विश्व कल्याण के लिये अपनी अस्थियों का दान दिया उस समय उनकी पत्नि वेदवती गर्भवती थी. ऋषि पत्नि को याद दिलाया कि तुम्हारे गर्भ में जो ऋषि का तेज है वे कुलदीपक है अतः सती होने का विचार त्याग दे. शल्य क्रिया से गर्भ निकाल कर पीपल के वृक्ष को सौंपते हुये कहा कि आप इसकी रक्षा करें एवं कुलदेवी दधिमति को इनकी रक्षा का भार सौंपा गया. पीपल के वृक्ष के नीचे इनका लालन-पालन के कारण इनका नाम पीपलाद पड़ा. इनका विवाह राजा अनरण्य की पुत्री पद्मावती से हुआ. उनके सूर्य के समान १२ पुत्र हुए और वे दाधीच ब्राह्मणों के गौत्र प्रवर्तक ऋषि हुये. उनके कुल १४४ पुत्र हुए. जो दाधीच ब्राह्मणों की शाखा कहलाई.

महर्षि दधीचि ने भारत के अनेक

प्रान्तों में तपस्या की जिसमें गुजरात, राजस्थान के पुष्कर क्षेत्र मुख्य हैं. कई जगह उनके नाम से तीर्थ है. उनका आदर्श जीवन हमें हमारे देश एवं समाज तथा विश्व को प्रेरण देते हरेंगे. राष्ट्र-धर्म और समाज के लिये अपना सर्वस्व न्योछावर करने वाले स्वाधीनता संग्राम के नक्षत्र वासुदेव बलवन्त फडके ने अपने अन्तिम इच्छा के रूप में यही प्रकट किया कि महर्षि दधीचि की तरह उनके शरीर का प्रत्येक अंग नर-पिशाच अंग्रेजों के विनाशा के काम आवे. महात्मा गांधी ने भी सन् १९२० में सांबरमती के तट पर कांग्रेस अधिवेशन स्थल को दधीचि नगर नाम दिया और कहा कि यदि देशवासी महर्षि दधीचि के आदर्श को अपना सकें तो भारत की स्वतंत्रता के निकट आने में कुछ भी विलम्ब नहीं होगा. यही बात १९२८ कलकत्ता में स्वतंत्रता सेनानी श्री चन्दनमल बहड की अध्यक्षता में दधीचि जयन्ती पर गाँधी जी ने कहा. भारत सरकार ने इनकी याद में २६.३.१९८८ को डाक टिकट जारी किया. जिसका जयपुर में मुख्यमन्त्री श्री शिवचरण माधुर ने विमोचन किया. उनके शब्दों में महर्षि दधीचि किसी धर्म और सम्प्रदाय की धरोहर नहीं हैं वरन् वे समूची मानवता के है. उन्होंने सम्पूर्ण समाज को एक नयी जीवन-धारा दी है. "देकर अपनी अस्थियाँ, किया विश्व कल्याण, दानवीर दधीचि सा होगा कौन महान।" विश्व प्रसिद्ध अमेरिकी लेखक स्वेट मार्टिन की पुस्तक "प्रभावशाली व्यक्ति कैसे बनें" में भी महर्षि दधीचि का उल्लेख किया है. दधीचि की तुलना उन्होंने जीसस क्राईस्ट से की है. वीरता के लिये दिया जाने वाला सर्वोच्च सैनिक सम्मान परमवीर चक्र का प्रारूप में भारतीय महर्षि दधर्षि दधीचि से प्रेरणा ली है. रामचरित मानस में तुलसीदासती ने कहा "शिवि दधीचि हरीचन्द नरेशा, सहे धर्म हित कोटि कलेशा।" महर्षि दधीचि के व्याग व दान की महिमा के अनुसार दीनदयाल शोध संस्थान के संस्थापक, समाजसेवी श्री नानाजी देशमुख ने सर्वप्रथम ११.१०.१९९७ को देहदान का संकल्प लिया. इनके साथ-साथ कई लोग अब देहदान कर चुके हैं. हम सभी को देहदान, अंगदान, नेत्रदान, रक्तदान की प्रतिज्ञा करके उस महान त्यागी दानी राष्ट्र-पुरुष को शत-शत नमन करें, यही सच्ची श्रद्धांजलि है

**"जीवन पुष्य चढ़ा चरणों में,**
**मांगे मातृभूमि से यह वर-**
**तेरा वैभव अमर रहे दधीचि,**
**हम दिनार रहें न रहें।**
**जय दधीचि-जय भरत-**

# भाग्य

✍डॉ० सुरेश प्रकाश शुक्ल,
एसोसिएट प्रोफेसर, लखनऊ, उ.प्र.

**द्वारिका** को अपने हिस्से की तीन बीघे काश्त की भूमि मिली थी. कहते हैं कि उनके पुरखों की सौ बीघे की काश्त थी लेकिन बीस घरों में बंटते-बंटते इतनी कम रह गयी कि अनेकों परिवार तो गुजर बसर करने को दिन रात जूझते हैं. द्वारिका गरीब ही सही लेकिन फितरती है तो अपने पट्टीदारों से अच्छा कमा खा लेते हैं. अपनी तीन बीघे खेती को भी बड़ी मेहनत से करते हैं और समय निकाल कर दो तीन घंटे गांव के पूरब दिशा में धनुषाकार बहती शारदा नहर की पुलिया पर अपनी औजार भरी पेटी और पम्प लेकर जरूर बैठ जाते हैं. आने जाने वाले लोगों की सायकिलें ठीक करके और नहीं तो केवल हवा भराई में ही द्वारिका दस पाँच रुपये बनाा ही लेते हैं. खाने के समय जब पड़ोस से कोई बनी दाल तरकारी, मांगने आता है तो द्वारिका और उनकी पत्नी को सुख के साथ-साथ कुछ गुमान भी हो आता हैं.

गाँव में किसान हो मजूर हो, या जुलाहे. सभी की जिन्दगी प्रायः तंग ही रहती है. किसी को खेत का बहाना तो किसी को परोहनो का और सभी को कुछ काम धाम तो करना ही है लेकिन दो समय ठीक से भोजन केवल उन्हीं को मिलता है जो या तो अच्छे व्यापारी हैं, दुकानदार है या फिर बड़े किसान. और हाँ वे लोग इधर आजादी के बाद से नौकरी चाकरी करके कुछ धन कुबेर बने हैं जो चार अक्षर नसीब से पढ़ गये. बाकी सब तो तंगदस्त मैं बाल बच्चों के दिन रात पेट पालने के जुगाड़ में ही खटते रहते हैं.

एक दिन द्वारिका खेतों से आए और खाने पर बैठे तो पत्नी ने उन्हें फिर याद दिलायी. अमोली से कुछ खबर आयी? तुमने मुरलीधर पंडित से अपनी बिट्टों के लिए वहां जाने को कहा था न?

पत्नी पुराने विचारों की है. स्वयं भी जैसे सोलह साल में ब्याह दी गयी थी और अगले ही साल बिट्टों की मां बनी थी. वैसे ही चाहती थी कि जैसे बने बिट्टो की भी शादी जल्दी से हो जाए.

देखो बिट्टों के बापू, हमारे यहां तो जल्दी ब्याहने की रीति है. और जमाना देखो कितना खराब है? रोज ही अपहरण और अनाचार सुनाई देते हैं. तुम जल्दी से उन लोगों की मंशा जान लो.

द्वारिका बोलते वैसे भी बहुत कम ही है, खाते समय सुनते ही रहे. बाद में इतना कहा-'तुम तो अब रोजै दम करै लागी हौ. अरे अबहीं हमार बिटियाँ है कत्ते दिन की? अबहिनै से शादी बियाह? और बियाह का ऐसेहे होई? ईमा तो तमाम जनेन कै भुंइव तक बिकाय गै. अब बताओ भला. अपनी ई उत्तरी अउती आंतन का ईलाज करी कि बिट्टो केरि हाथ पीले करी?'

तुम कुछ भी करो? और मेहनत मजूरी करो लेकिन अपने ईलाज के संग-संग इस समस्या पर भी ध्यान दो.

चार अक्षर पढ़कर कस्बे से आयी द्वारिका की पत्नी ने उन्हें आदेश सुना दिया. घर में उन्हीं की चलती है. खरीदारी, सौदा, सलूक, रिश्तेदारी सब उन्ही के इशारे पर होता है और उनकी बिट्टो भी अपनी माँ के संस्कारों और विचारों को रोज सहेजती बड़ी हो रही थी. अपने जीवन के अभी पंद्रह सावन ही झूले गाये थे लेकिन अपनी सहेलियों से अधिक सयानी और सुंदर लगने लगी थी बिटोली. कोई कितना भी रुठा हो, बिटोली अपनी बड़ी बड़ी आंखों को नचाती जब अपने अंदाज में उन्हें मनाती तो सभी उसे गले से लगाकर आशीष देने लगते थे.

जैसे-जैसे दिन बीत रहे थे. बिटोली का रूप सौंदर्य भी खिलने लगा था. रसोई से खाना परोसते उसने आंगन में मां बाप से अपने विवाह की बाते अक्सर ही सुनी थी. यह बिटोली को भाती बिल्कुल न थी लेकिन एक नया विचार, कोतुहल और भीतर दबी स्वाभाविक इच्छा उसे हर बार लजाने पर विवश कर देती. एक दिन मां ने उससे कहा,'अरे बिट्टो, इस चौके चूल्हे के अलावा भी कुछ सीख-साख लो. पढ़ना लिखना तो नसीब न हुआ, कुछ गुण ढंग ही सीख लो. आगे यही काम आएंगें.

बिट्टो की अम्मा थी तो गरीब घराने की लेकिन कस्बे से आयी थी. कुछ पढ़ी भी थी लेकिन गुण ढंग पहनावे शौक और फैशन में अभी भी नयी नवेलियों को पीछे किए रहती है. यह सब हावभाव और बिटोली के पिता के आध्यात्मिक स्वभाव और अति मृद और मिलनसार व्यवहार के सभी लक्षण उसमें समा गये थे. तभी तो बिटोली को सभी चाहते थे. उसके माँ बाप सहेली सब उसे पलकों पर रखते थे.

पिता को कुदाल काँधे पर धरे आँगन में आते देखा तो मचलते हुए ठुनक पड़ी बिटोली, अम्मा को देखो न बापू, कहती है सिलाई कढ़ाई भी करो.

अरे और नहीं तो का. बेटि केरि गुनै ढंग तौ ऊका आगे बड़े काम आवति है बिटिया. अबहीं समय है.

सब सिखि लियो, नाई तौ तुमारि अम्मा तुमका जल्दी ही आने गांव पठवैकि तैयारी करै लागी है.

बापू अब तुम भी. जाओ मैं तुम दोनों से नहीं बोलूंगी हां. लजाते हु बिटोली भीतर चली गयी थी.

समय कब रुका है. देखते-देखते तीन माह और बीते. द्वारिका ने जो बीज रवी में अंकुरित किए थे, वे धरा के साथ पुष्ट होकर अब फलित होने लगे थे. जाड़ा अब उतार पर आ गया था और बसंत तथा होली आगमन के संकेत देकर लोगों के सर्द और पपड़ीले पड़े चेहरों पर रौनक और आशा की नयी फसल भी दिखाने लगा था. द्वारिका द्वारे पड़ी बालू से अपने पीले पड़ गए दांत मांज ही रहे थे कि सामने से मुरलीधर पंडित आते दिखे. द्वारिका ने दूर से ही प्रणाम किया.

पांय लागी पंडित जी. कहौ आजु अत्ते सवेरे अइसी धमक परे. आओ हिंया बैठो आय. अरे बिट्टो दुयाखौ ई पंडित जी आए हैं, कुछ पानी पत्ता लाओ तो.

भीतर को संकेत देकर द्वारिका आगे के हाल जानने के लिए पंडित के करीब बैठ गए तो मुरलीधर ने बताया.

यजमान, हम अमोली गए थे. अरे वे लोग तो एकदमै तैयार हैं. अरे उनकी भी तो गरज है. चार चार बेटवा सयाने शादी के लायक हैं लेकिन द्वारे कोई बिटिया वाला फटकतै नहीं.

अरे राम राम. तौ का पंडित जी उइ अतने गरीब हैं? भाई तब तौ हमहुक स्वाचैक परी. हमारि बिटियां कौनिव खाति पियति घरका जाई कि हिंया ...हि, पंडित ने द्वारिका के मन की जान ली.

वो बात नहीं है द्वारिका यजमान. उनके घर में कमी कुछ नहीं. बैल परोहन दूध-दही बैलगाड़ी सब तौ है, वो तो लड़के के चाचा के गैर जात रमिया से सम्बंध जुड़ जाने से उनकी जवार में, रिश्तेदारी में कुछ किरकिरी हो गई ससुर. नहीं तो उनके बेटे अब तक पड़े रहते?

अन्दर से बिटोली की माँ उन दोनों की बातें सुन रही थी, बाहर आकर पूछा, महराज! क्या लड़का अधिक सयाना है? हमारी बिट्टो तो अबहीं सुकुमारिनि है.

पंडित जी पुतलियों को उनकी ओर घुमाते और आदतन अपनी मूंद नीचे सहलाते लपक कर बोल पड़े, 'कुछु खास नहीं यजमानिन.'

बस पैतिस चा. नाहीं बिट्टो की अम्मा, लरिका पैतिस के भीतर ही है. अब इतना अन्तर तो चलता है न. तुम देखना यजमानिन ई बिटिया बेटारुन को सयानी होने में भला देर लगती है कहीं? ही ही ही.

आगे कुछ दिन सोच विचार किया द्वारिका ने. अपनी सेहत से, अपनी आमदनी से तंग व्यक्ति मजबूर परिस्थिति से जुड़ता है, तब भी द्वारिका का मन इतनी जल्दी जब बिटोली को ब्याहने का ही न था तो यहां की विपरीत सी या कुछ बेमेली जैसी स्थिति में बिटिया को भेजने की कल्पना मात्र से वे भीतर आहत होने लगे. उनकी पत्नी ने एक दिन कहा भी, 'तुमसे अब ज्यादा चला फिरा भी नहीं जाता. पंडित छह माह में कहीं रिश्ता लाते हैं, वह भी ऐसा. अब ऐसा करते हैं कि यह जो अमोली वाला रिश्ता है इसे ही बिटिया का भाग्य मान लेते हैं. हमारी बिटोली सब सँभाल लेगी. आगे उसका भी तो भाग्य है.

भाग्यवादी भारतीय पत्नी ने हमेशा ही अपनी संतान का भला चेता है, सोचा है. अपने पर माँ का इतना विश्वास और पिता की कुछ अधिक बेटी के लिए न कर पाने की हतासा बिटोली सह नहीं पा रही थी. फिर घर में शादी बिटिया की तय होनी हो, इसी आभास से माहौल बोझिल होने लगता है. इन परिस्थितियों में बिटोली को भी जल्दी ही अपने अम्मां बापू से विदा होना था. भीतर से छोटी सी शीशी की बनी डिब्बी की लौ तेज करते आते ही बिटोली ने धीरे से कह दिया.

तुम लोग परेशान न हो, और जैसा ठीक समझो करो. अम्मां ठीकै कहती हैं. हम गरीबन की क्या इच्छा और क्या शिक्षा?

अगले ही दिन समूचे गांव में यह खबर रामरत्ती नाईन ने फैला दी कि

## अरे, अरे! ये क्या......?

द्वारिका की बिटिया की शादी अगले माह तय है.

धूम धाम न सही तो भी द्वारिका ने दो बीघे खेत सरुपे पंसारी के हाथ गिरवी रख कर बेटी को जैसे बना विदा किया. यहां तक तो सब ठीक था. लेकिन जैसे ही बिटोली ने पति के आंगन में कदम रखा उसे हकीकत जानते ही पसीने आ गये. पति था तो बड़े किसान जमींदारी घर का बताते हैं. जमीन भी सैकड़ों बीघे थी लेकिन सब अय्यासी में भेंट चढ़ गयी. बाप और चारों बेटे सर्वगुण संपन्न निकले. पंडित ने लालच में द्वारिका को फांस दिया था. शाम को जब रोज नशेड़ियों और बदचलनों के सामने तक बिटोली को चाय नाश्ते के बहाने जाना पड़ता तो उसका दिल कचोटकर रह जाता. अपने बापू के कहे वचन याद आते लेकिन माँ ने उसे भाग्य की राह दिखायी थी. अगले पाँच वर्षो में ही उसका सारा शरीर निचुड़ गया. निठ्ल्ले पति की शोहबत और उसकी अपनी कूबत ने इस दरमियान पाँच बच्चों को उसकी टिमटिमाती निगाहों के आगे ढकेल दिया. एक दिन रक्षाबन्धन और जन्माष्टमी के त्योहार में उसने अपनी सहेलियों के बीच माँ को ताना भी मारा था.

अब ताई चाची के सामने रोना रोने से क्या होगा अम्मां? तब तो न सोचा. बापू को भी दबोच लिया फिर अब छोड़ दो मुझे मेरे भाग्य पर?

और अगले ही साल बिटोली पर तब गाज ही गिर गयी जब उसके शराबी पति ने अचानक ही एक रात दम तोड़ दिया. तबसे जूझ रही बिटोली ने निश्चय व दृढ़ता दिखायी है और साईकिल मरम्मत का काम अपने ननिहाल कस्बे में करके बच्चों को पढ़ा रही है.


**कल, आज और कल भी बहुपयोगी**

# विश्व स्नेह समाज मासिक

**(एक रचनात्मक क्रान्ति)**

एल.आई.जी.–93, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद –211011
कानाफुसीः 09335155949 ई–मेलःvsnehsamaj@rediffmail.com

महोदय,
मैं विश्व स्नेह समाज मासिक का वार्षिक / पंचवर्षीय / आजीवन / संरक्षक सदस्यता शुल्क रुपये ..........................................................नकद / बैंक ड्राफ्ट / पे इन स्लिप...........................दिनांक.......................के अन्तर्गत अदा कर रहा हूँ. अतः मुझे हर माह विश्व स्नेह समाज मासिक निम्नलिखित पते पर भेजें.

नाम :..................................................................................................
पिता / पति का नाम :.........................................................................
पता :..................................................................................................
डाकखाना :..............................................जनपद.............................................
राज्य :..................................................पिन कोड.........................................
दूरभाष / मो0............................................ईमेलः..........................................

**विशेष नियमः**
01 सदस्यता शुल्क बैंक ड्राफ्ट इलाहाबाद में देय होना चाहिए.
02 कृपया अपना नाम व पता स्पष्ट अक्षरों में लिखें.
03 सदस्यता शुल्क यूनियन बैंक के खाता क्रमांकः538702010009259 आईएफएससीस कोड (आरटीजीएस): UBIN0553875 में जमा कर जमा पर्ची की छाया प्रति कार्यालय को प्रेषित कर सकते हैं.
04 आजीवन सदस्यों का सम्पूर्ण सचित्र जीवन परिचय प्रकाशित किया जाता है व संस्थान के प्रकाशनों में 25प्रतिशत की छूट प्रदान की जाती है.
05 सरंक्षक सदस्यों का नाम प्रत्येक अंक में मोबाइल नं0 सहित प्रकाशित किया जाता है तथा सम्पूर्ण सचित्र जीवन परिचय भी प्रकाशित किया जाता है.

| सदस्यता प्रकार | शुल्क(भारत में) | शुल्क (विदेशों में) |
|---|---|---|
| एक प्रति : | रु0 10 / – | $ 1.00 / |
| वार्षिक | रु0 110 / – | $ 5.00 / |
| पाँच वर्ष : | रु0 500 / – | $ 150 / |
| आजीवन सदस्यः | रु0 1100 / – | $ 350 / |
| संरक्षक सदस्यः | रु0 5000 / – | $ 1500 / |

## नेता व्याजस्तुति और जागो भाग्य विधाता

रचनाकारः बालाराम परमार 'हंसमुख'

मूल्यः 50/रुपये मात्र

प्रकाशकः
विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान,
एल.आई.जी.-९३, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद, उ.प्र.-२११०११

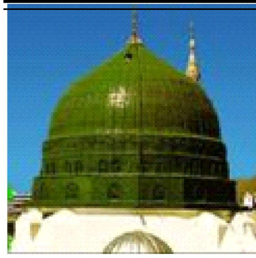

# रमज़ान महीने की कड़ी इबादत व रियाज़त का इनाम है-ईद

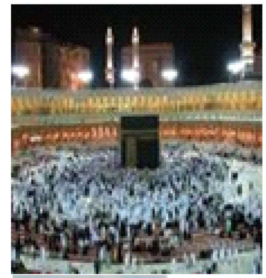

-रमेश कुमार शर्मा,
इलाहाबाद, उ.प्र.

**माहे** शाबान चॉद की अन्तिम तारीख़ को सूरज ढ़लने के बाद चाँद दिखाई पड़ने पर पवित्र रमज़ान महीने का सिलसिला शुरू हो जाता है। जिस दिन चॉद दिखाई पड़ता है उसी दिन बाद नमाज़े एशा (करीब ०८:३० बजे रात्रि) के बाद तराबीह नमाज़ पढ़ाया जाना शुरू हो जाता है और रात गुज़रने पर सुबह सादिक (लगभग ४ बजे भोर) लोग सेहरी (कुछ नाश्ता पानी) करके रमज़ान की पहली तारीख़ से रोज़ा प्रारम्भ कर देते हैं तथा दिन भर रोज़ा रखने के बाद शाम को सूरज डूबने पर इफ़्तार (नाश्ता पानी) करते हैं।

रोज़े का शाब्दिक अर्थ ठहरने और रूक जाने का है जो इस्लाम के परिभाषित शब्दों में अल्लाह की रज़ा हासिल करने के लिए अपनी नफ्सों (इन्द्रियों) को सुबह से शाम तक (सूरज डूबने तक) तमाम नफ़्सानी ख्वाहिशातों से बाज (अलग) रखना है। मुबारक रमज़ान महीने में रोज़ा रखने से इंसान को जहां जिस्मानी (शारीरिक) तौर पर फायदा होता है वहीं उसकी रूहानी (अन्दरूनी) सलाहियतें इस तरह साफ और निखर कर चमक जाती हैं कि इंसान दिल व दिमाग में तमाम बुरे ख़यालातों से अपने को कतई दूर रखता है। रोज़ा रखने वाले को अपने दिल-दिमाग आँख, कान, हाथ, पैर अर्थात शरीर के हर अंगों को तमाम बुराइयों से बचाते हुए रोज़े का एततराम करते हुए तमाम गुनाहों से कतई बाज (दूर) आना ही रोज़ा है। कोई जान बूझ कर लड़ना चाहे तो उससे नरमी से कहो भाई मै रोज़े से हूँ। रसूलल्लाह सल्लाहो अलैहे वसल्लम (मुहम्मद साहब) ने फ़रमाया रोज़ा एक किस्म से गुनाहों की ढ़ाल है, जो दुनियाँ में रोज़ेदार को शैतानी शर से महफूज (सुरक्षित) रख कर आख़िरत में अज़ाबे दोज़ख से बचाती है।

रसूलल्लाह सलल्लाहो अलैहे वसल्लम (मुहम्मद साहब) मुबारक रमज़ान महीने का आमद से पहले लोगों के बीच खुतबा (तकरीर) इर्शाद फ़रमाते और रमज़ान महीने की फ़ज़ाइल (फायदे) से लोगों को आगाह किया करते तथा आप खुद भी रोज़ा रखते एवं पवित्र महीने का इस्तिकबाल (स्वागत) करते थे।

रसूलल्लाह स०अ०व० (मुहम्मद साहब) ने फ़रमाया ऐ मुसलमानों तुम लोगों पर एक ऐसा अजीमुश्शान (बड़ी शान) वाला महीना आने वाला है, जो बड़ी ही बरक़तों वाला है। अल्लाह तआला ने इस महीने मे रोज़े तुम पर फ़र्ज फ़रमाये तथा क़याम (तराबीह) सुन्नत करार दिया जो मुसलमान इस महीने में ख़ैरात जक़ात किया तो उसका सत्तर गुना सबाब माना जाता है। आपने फिर फ़रमाया यह महीना सब्र का है ज्यादा से ज्यादा सब्र करो, सब्र का बदला जन्नत है। इस महीने में मोमिन का रिज्क बढ़ा दिया जाता है, जो इंसान इस महीने में रोज़ेदार को रोज़ा इफ़्तार करायेगा वह उसके लिए गुनाहों की बख़्शिश का जरिया एवं दोजख़ से नजात का सबब बनेगा तथा इफ़्तार करने वाले के रोज़े के सबाब में कोई कमी न आयेगी अगर कोई भरपेट खिलाने का सामर्थ न रखता हो तो एक घूंट दूध या एक खजूर व थोड़ा पानी ही पिलाए तो भी उतना ही सबाब उसे मिलेगा तथा अल्लाह तआला उसे जन्नत अता फ़रमायेगा।

रसूलल्लाह स०अ०व० ने फ़रमाया इस महीने में तीन असरा (हिस्सा १० दिन का) होते हैं, पहला "असर ए रहमत" दूसरा मगफ़िरत, तीसरा आग से नज़ात व खलासी का है। रमज़ान महीने की पहली रात को ही तमाम सरकश शैतानी कूव्वतें कैद कर ली जाती हैं और जन्नत के तमाम दरवाज़े खोल दिये जाते हैं तथा अल्लाह की तरफ से निदा (आवाज) आती है कि ऐ नेक बंदो नेक कामों के लिए आगे बढ़ो तथा बद आमाल इंसान तूं अपने बुरे कामों से बाज़ आ जा। अल्लाह तआला अपने रोज़ेदार बन्दों को रमज़ान के रोज़े रखने और रातों को क़याम यानी रातों को जाग कर गहरी इबादत करने के बदले में दोज़ख से नज़ात अता फ़रमाता है।

**रमज़ान महीने की एक रात लैलतुल क़द्र है जिसे शबेकद्र भी कहते हैं**, जो हजार महीनों से बेहतर है। अल्लाह तआला ने कुरान मजीद

को इसी रात को दुनिया में उतारा है। इस रात की इबादत व नेकी हजार रातों की इबादत व नेकी से बेहतर है। यह अमन व भलाई की रात है। इस रात में फ़रिश्ते अल्लाह के हुक्म से मोमिन की भलाई के लिए दुनिया में उतरते हैं। इस महीने में मुसलमानों को रोज़े रखना, तिलावते कुरान करना, खैरात-जकात करना तथा तमाम बुराइयों से बाज आना लाज़िमी है। रमज़ान की पहली तारीख़ से शुरू होकर महीने की अंतिम तारीख़ को चाँद दिखाई पड़ने की तस्दीक होने पर रोज़ा समाप्त हो जाता है। रमज़ान की पहली रात से ही अल्लाह तआला अपने बन्दों पर नज़र रखता है, हर रोज जहन्नम से दस, दस हजार लोगों को आजाद करता है, जब माह की आखिरी तारीख़ की रात आती है तो महीने में जितने आजाद किए, उन सब के मजमूए (टोटल) के बराबर और लोगों को आजाद करता है। शबे ईद (ईद की रात) आती है तो फ़रिश्ते ख़ुशी करते हैं अल्लाह अपने नूर की ख़ास तजल्ली (तवज्जह) फ़रमाते हैं और फरिश्तों से कहते हैं कि उन मोमिन बन्दों का क्या बदला है जिन्होंने महीने भर पूरी मेहनत व मशक्कत से मेरे लिए रोज़े रखे, कयाम किए, तिलावते कुरान किए वगैरह। फरिश्ते अर्ज करते हैं, ऐ अल्लाह तआला उनको पूरा अज्र दिया जाए, अल्लाह फ़रमाते हैं ऐ फरिश्तों तुम गवाह हो मैंने आज शबे ईद के सबब सब को बख्श दिया, यह आखिरी रात वह रात है जब काम करने वाले काम करके फ़ारिग होते हैं तो इसके बाद मेहनताना/इनाम पाते हैं, **"इस पवित्र रमज़ान महीने की कड़ी इबादत व रियाज़त का इनाम है, ईद"।**

ईद के दिन सभी मुसलमान सुबह नहा धोकर साफ सुथरे नये कपड़े पहनकर ईदगाहों, मस्जिदों में सामूहिक रूप से ईद की नमाज़ अदा करते हैं और हर रंज-गम को भुलाकर आपस में गले मिलते हैं जगह-जगह ईद मिलन समारोह का कार्यक्रम किया जाता है जहॉं सभी धर्मों के लोग एकत्र होकर साम्प्रदायिक भेदभाव को भुलाकर गले मिलते हैं। इस प्रकार यह पवित्र त्योहार (पर्व) राष्ट्रीय अखण्डता को एकता के शूत्र में पिरोने का कार्य करता है, जो हमारे राष्ट्रहित के लिए सर्वोपरि है।


# क्या आप लिखते हैं ?

अपने काव्य संग्रह, कहानी संग्रह, आलेख संग्रह इत्यादि के प्रकाशन हेतु संपर्क करें।

**विशेष आकर्षण**

१. प्रकाशन मात्र लागत मूल्य पर
२. बिक्री की व्यवस्था
३. प्रचार—प्रसार की व्यवस्था
४. विमोचन की व्यवस्था

विस्तृत जानकारी के लिए जवाबी लिफाफे के साथ लिखें

प्रसार सचिव
विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान,
एल.आई.जी—93, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा,
इलाहाबाद—211011
bs&esy% sahityaseva@rediffmail.com



# जनसंदेश

यदि केन्द्रीय सरकार/सरकारी बैंक/केन्द्रीय सरकार के उपक्रम का कोई भी अधिकारी घूस माँगे तो फोन करें:-

एस.पी. सीबीआई, लखनऊ-
०५२२ २२०१४५६, २६२२६८५
और एस.एम.एस ९४१५०१२६३५

# श्रद्धा,आस्था एवं निष्ठा

✍ **सुरजीत सिंह साहनी**
कोटा, राजस्थान

पन्द्रहवी सदी का समय था जब गुरूनानक देव विश्व भ्रमण करते हुए एक शहर पहुँचे जहाँ एक खतरनाक शातिर चोर भूमीया रहता था. जिसका खानदानी पेशा ही पाप प्रवृत्ति वाला धन्धा चोरी करना था. एक दिन वह जिज्ञासावश सत्संग में आ पहुँचा जहां गुरूनानक देव गुरूवाणी का गायन कर रहे थे कि हमेशा पुण्य कार्य करने चाहिए. चोरी करना घोर अपराध है. गुरूदेव के यह दिव्य अनमोल वचन चोर के कानों में सुनाई दिये, मानो वह घायल हो गया हो. वह एक दम तड़प उठा और गुरूदेव की शरण में आकर अपनी आप बीती सच-सच बखान करने लगा. गुरूदेव ने कहा चोरी करना पाप है इसको छोड़ना ही होगा. चोर सोचने लगा, चोरी तो मेरा व्यवसाय है. यदि चोरी नहीं करूंगा तो खाऊंगा क्या और अपने परिवार का पेट कैसे पालूंगा, उल्टे भूखे मरने की नौबत आ जायेगी. इस प्रकार चोर ने गुरूदेव से चोरी छोड़ने में अपनी असमर्थता व्यक्त की. चूँकि गुरूनानक देव तो आध यात्मिक तरीके से उसका मन परिवर्तित करना चाहते थे. इसलिये उन्होंने जवाब दिया-ठीक है जैसी तुम्हारी इच्छा किन्तु तुम्हें तीन बातों का पालन करना आवश्यक होगा. सत्य बोलना, नमक हराम न होना, गरीब मार न करना. चोर ने स्वाभाविक ही सोचा कि मेरी चोरी का धन्धा तो यथावत ही चलता रहेगा इसलिये उसने तुरन्त ही हामी भर दी. अब क्या था भूमिया चोर ने रात में ही राजमहल में चोरी करने की योजना बना डाली और मध्य रात्रि को राजमहल में चोरी करने के लिये जा पहुँचा. राजमहल के द्वारपाल ने पूछा-कौन हो तुम? चोर को गुरूदेव को सत्य बोलने का दिया वचन याद आ गया और उसने तपाक से उत्तर दिया-'मैं चोर हूं.' द्वारपाल के मन में शंका उत्पन्न हो गई कि यदि यह वास्तव में चोर होता तो अपने आप को स्वयं ही चोर न कहता. हो ना हो यह राजा का कोई अत्यन्त विश्वासपात्र ही है और किसी गुप्त राजकार्य में लिप्त है इसलिये द्वारपाल ने उसे सम्मान सहित अन्दर जाने दिया. अब क्या था-अपनी प्रवृत्ति के अनुसार चोर ने अन्दर पहुँचते ही तिजोरी के ताले को तोड़कर धन- दौलत की गठरी बाँध ली और वापस लौटने से पूर्व अपनी भूख मिटाने के लिये वह रसोई में चला गया जहां सफेद रंग के रखे पदार्थ 'नमक' को अनायास ही उसने खा लिया. चोर को गुरूदेव को दिया दूसरा वचन 'नमक हराम नहीं होना' एकदम से याद आया. इसलिये उसने धन-दौलत की बंधी गठरी को वहीं छोड़ खाली हाथ ही राजमहल से वापस घर लौट आया और गहरी नींद में सो गया. प्रातः काल राजमहल में चोरी का पता लगते ही और बंधा हुआ माल वहीं पड़ा रहने पर सब तरफ तलाश शुरू हो गई. राजा के आदेश से राजदरबारी निर्दोष लोगों को चोरी के जुल्म में पकड़-पकड़ कर मारने लगे और जेल में बन्द करने लगे. अब भूमीया चोर को गुरूनानक देव को दिया तीसरा वचन 'गरीब मार नहीं करनी' याद आ गया और वह फौरन राजा के सामने राजमहल में हाजिर हो चोरी कबूल करते हुए कहने लगा कि 'महाराज चोरी मैंने की है इसलिए दण्ड मुझे ही मिलना चाहिए, अन्य सबको जेल से रिहा कर दिया जाय.' चोर के इस असाधारण व्यवहार से राजा को बहुत आश्चर्य हुआ और उसने उत्सुकतावश चोर से इसका कारण जानना चाहा. चूँकि अब चोर के मन से अज्ञानता और अन्धकार का परदा उठ चुका था और उसका मन गंगा जल की तरह पवित्र हो चुका था. इसलिये उसने सारी घटना का सत्यतापूर्वक वर्णन कर दिया. राजा चोर की गुरूभक्ति और सत्यनिष्ठा से बहुत प्रसन्न हुआ और उसने दरबार में नौकरी देकर उसकी और उसके परिवार की जीविका का हमेशा के लिये उचित प्रबंध कर दिया. राजा के मन में जिज्ञासा जागृत हुई कि वह गुरू कितना महान होगा, जिसकी क्षण मात्र की संगत से ही एक शातिर अपराधी भी समस्त दुगुर्णो को त्याग कर गुरूभक्त हो गया इसलिये उसने भूमीया चोर जो अब बिल्कुल गंगा नीर की तरह पवित्र हो चुका था, से अनुरोध किया कि वह गुरूदेव के पास ले चले. गुरूदेव के दर्शन कर राजा कृतज्ञ हो गया. क्योंकि गुरूदेव का उपदेश था सत्य बोलो, सत्य सुनो और सत्य करो और यही वर्तमान में भारतीय संस्कृति और प्रजातंत्र का प्रथम आदर्श है 'सत्यमेव जयते' अर्थात् सत्य की ही जीत होती है. सत्य ही स्वर्ग है और इसके विपरीत असत्य/मिथ्यावाद ही नर्क का दूसरा नाम है.

गुरूदेव ने श्री गुरूग्रन्थ साहिब की प्रथम वाणी 'जपुजी' में भी सत्य स्वरूप का ही उपदेश दिया है **'आदि सचु, जुगादि सचु, है भी सचु, नानक होसी भी सचु'**

# घर परिवार

✍ सत्यपाल निश्चिन्त,
नोएडा, उ.प्र.

''विजय सिंह की नोएडा में एक कम्प्यूटर कम्पनी में नौकरी लग गयी है. वह साफ्टवेयर इंजीनियर है. घर बुलन्दशहर है सो यहां नोएडा आकर कमरा किराये पर लेकर रहता है. शनिवार, रविवार की छुट्टी रहती है सो वह दो दिन के लिए हर सप्ताह घर आ जाता है.

कल सायं को वह घर गया तो उसकी पत्नी शकुन्तला बोली-'सुनिये जी, मेरा यहां बिल्कुल ही मन नहीं लगता. घर में हर समय चिकचिक होती रहती है. मम्मी जी भी अपना रौब इस तरह दिखाती है जैसे कि मैं उनकी नौकरानी हूं. तुम्हारी अनुपस्थिति में मुझे बिल्कुल अच्छा नहीं लगता. मुझे भी अपने साथ नोएडा ले चलो. जिससे मैं शान्ति से अपना जीवन बीता सकूँ.

देखो शकुन्तला, सुख तो संयुक्त परिवार में रहकर ही मिल सकता है. अकेलेपन में नहीं. मेरे आफिस जाने के बाद तुम घर में बिल्कुल अकेली रह जाया करोगी. घर तुम्हें काटने को दौड़ा करेगा. यहा परिवार में सभी के साथ समय किस तरह कट जाता है तुम्हें पता ही नहीं चलता होगा.

कुछ समय से आजकल की नवयुवतियों को अकेला रहना, अपनी मन मर्जी से जीना, खाना-पीना और घूमना पसंद है. जिसकी वजह से संयुक्त परिवार टूटकर एकल परिवार बनते जा रहे हैं. जिन्होंने संयुक्त परिवार की वजह एकल परिवार में रहना पसंद किया है उन्हें अपने अकेलेपन का जो नुकसान है उसे भी भुगतान पड़ता है. सभी कठिनाइयों व समस्याओं को स्वयं ही झेलना पड़ता है. सो देख लो मुझे तो कोई अन्तर नहीं पड़ेगा. तुम ही परेशान हो जाओगी.

नहीं ऐसी बात नहीं हैं. मैं तो आपके साथ ही चल कर एकान्त में रहना पसंद करूंगी. इस बार मुझे भी अपने साथ नोएडा लेकर चलिएगा.

नोएडा जैसे शहर में दो कमरे का फ्लैट भी आठ दस हजार रुपये माहवार पर किराये पर मिलता है. सो विजय सिंह ने दो कमरे का मकान बड़ी सी कॉलोनी में किराये पर ले लिया. जिसमें अधिकतर नौकरी पेशा वाले लोग ही रहते हैं. और अधिकतर पति पत्नी नौकरी करते हैं. सुबह निकल कर रात को ही घर वापस आते हैं. और अपने-अपने फ्लैटों में बन्द हो जाते हैं. किसी से बोलना, चालना, कुशल क्षेम पूछने का तो किसी को समय ही नहीं हैं.

शकुन्तला नये माहौल में आकर बहुत ही खुश हुई. हफ्ते में एक दो बार बाजार वगैरह भी घूम आयी. एक दो माह तो उसे बड़ा अच्छा लगा. एक दिन दोपहर करीब ११ बजे सिरदर्द हुआ और बुखार आ गया. उसे अकेले बड़ा अजीब सा लगा.

कालोनी में उसके कमरे के आसपास के सभी घरों में ताले लगे हैं. कोई दिखाई नहीं दे रहा है. सभी अपनी अपनी नौकरी पर सुबह ही निकल जाते है. कालोनी में न तो कोई डाक्टर का क्लिनिक है न हीं मेडिकल की दुकान है. पूरा दिन बहुत परेशान रही और बड़ी कठिनाई से उसे बुखार में ही पूरा दिन बिताना पड़ा.

आज उसे घर परिवार के महत्त्व का पता चला. संयुक्त परिवार में होती तो ऐसी परेशानी नहीं उठानी पड़ती. संयुक्त परिवार जिसमें प्रेम भाव, मेल मिलाप तथा सुख दुख में एक दूसरे का शामिल होना कितना सुहावना व शान्ति का माहौल होता है. ऐसा माहौल यहा परदेश में कहा मिलता है. यहाँ तो सभी अपने आप में ही मस्त है. बिना किसी काम के हर कोई इतना व्यस्त है कि किसी से बतियाने का, सुख दुख जानने का समय ही नहीं है. शकुन्तला सोचने लगी इनके आफिस जाने के बाद घर में आये एकाकी पन को दूर करने के लिए किसी न किसी की उपस्थिति तो जरूरी है ही. उससे सुरक्षा भी रहती है और मन भी प्रसन्न रहता है.

सायं को जब विजय सिंह घर आये तो शकुन्तला बोली-'अजी, सुनते हो. अब यहा मेरा मन नहीं लगता है जितनी जल्दी हो मुझे घर मम्मी-पापा के पास छोड़ आओ. शकुन्तला, अब क्या हो गया है तुम्हें. तुम्ही ने तो जिद करके मुझे अपने घर से परिवार से अलग किया और कहा था कि इस चिकित्सक

## ग़ज़ल

जिस लम्हा एतमाद को नाकामियां डसें।
उस लम्हा आगही को ग़लतहामियां डसें।।
जिस घर की आन-बान के होते थे तज़्किरे।
उस घर के अब वक़ार को बदनामियां डसें।।
जिसने क़दम-क़दम पे सजाए थे आईने।
उसकी चमक को धुंद की अबख़ामिया डसें।।
वो शोहरतों की ऐसी बुलन्दी पे है मुक़ीम।
उसको जहां फ़िज़ूल की गुमनामिया डसें।।
सूरज को डस रही हैं यूं परछाइयां तमाम।
जैसे कि सूदख़ोर को आसामियां डसें।
खुशियों के नर में वो नहाता था रात-दिन।
अब उसको रंजो-ग़म की सियह फ़ामियां डसें।।
जब मेरा उससे कोई तअल्लुक नहीं है 'राज'
क्यों मुझको उस मकान की नीलामियां डसें।।

**-डॉ० राजकुमारी शर्मा 'राज',**
गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश

से कहीं दूर चलो जहां शान्ति से जीवन बिता सकें.
हां, कहा तो मैंने ही था. घर से अलग शान्ति मिल जायेगी. किन्तु इन छह माह में ही मुझे घर का महत्व समझ में आ गया है. घर का अर्थ होता है संयुक्त परिवार. मैं अब तो ससुराल का अर्थ भी समझने लगी हूँ. ससुराल का अर्थ है संयुक्त परिवार. मैं संयुक्त परिवार के सुरक्षित वातावरण में प्रेम भाव और मेल-मिलाप से जीना चाहती हूं. सो मम्मी से पूछ लेना हम घर कब आ जायें.
ठीक है अवसर देखकर मम्मी-पापा से पूछ लूँगा कि उनकी इस बारे में क्या राय है? अभी तो मुझे आफिस के लिए देर हो रही है. जैसे ही मुझे समय मिलेगा मैं उनसे पूछ कर तुम्हें बता दूंगा अब तुम बिल्कुल चिन्ता मत करो.
शकुन्तला ने विचार किया कि उन्हें तो आफिस के काम के कारण बात करने का समय ही नहीं मिल पाएगा. हो सकता है कि इस बात को यह भूल ही जाएं. क्यों न मैं ही माताजी से बात कर लूँ. वह बूरा थोड़ा ही मानेगी उन्हें भी तो मेरी जरूरत है. अतः शकुन्तला ने अपनी सास को स्वयं ही फोन करके उनकी व परिवार की कुशल क्षेम पूछी. कुशलक्षेम पूछने के बाद शकुन्तला मुख्य विषय पर आई और बोली माताजी यह तो आफिस चले जाते हैं. मैं अकेली पूरे दिन यहां वोर हो जाती हूं. यहाँ सभी नौकरी पेशा वाले हैं. अधिकतर पति पत्नी दोनों ही नौकरी करते हैं. सो किसी को भी किसी से बतियाने का व कुशलक्षेम पूछने का समय ही नहीं है. सभी सुबह ही निकल जाते हैं और रात को सुख दुख में साथ देने वाला कोई नहीं है. मैं पुनः अपने घर आना चाहती हूँ आपकी इस बारे में क्या राय है.
यह जानकर कि तुम स्वयं ही घर वापिस आना चाहती हो मुझे बहुत खुशी हुई. दरअसल घर छोड़ते समय तुमने मेरी राय नहीं ली थी. नहीं तो उसी समय मैं तुम्हें घर परिवार के महत्व को, उसकी उपयोगिता को भली-भाँति समझा देती. खैर, अच्छा ही हुआ तुमने उस समय मुझसे पूछा नहीं मेरी सहमती नहीं ली. क्योंकि उस समय तुम्हें मेरी राय का महत्व समझ में नहीं आता और अच्छा भी नहीं लगता. खैर तुमने इन छह माह मं जो अनुभव प्राप्त किया उससे तुम्हें स्वयं ही अपनी गलती का आभास हो गया. इस अनुभव से तुम्हें बहुत सी बातों का बिना बताये ही पता चल गया है. मुझे बहुत ही खुशी हुई.
अब अधिक देर करने की आवश्यकता नहीं है. तुम फौरन घर चली आओ. यह घर तुम्हारा ही है. वही प्यार, सम्मान सुख तुम्हें यहाँ मिलेगा सो जितनी जल्दी हो सके अपने घर चली आओ. हम सभी को तुम्हारे घर आने का बेसब्री से इन्तजार है.

# गुजारिश

1. 'विश्व स्नेह समाज' आपकी अपनी पत्रिका है. इसे अकेले न पढ़ें, बल्कि दूसरों को भी इससे परिचित कराएँ.
2. आप अपनी मौलिक एवं अप्रकाशित रचनाएँ ही भेजें. एक बार में अधिकतम दो ही रचनाएँ भेजें. उनके प्रकाशनोपरान्त ही दूसरी रचना भेजें. रचनाएँ पर्याप्त हासिया छोड़कर कागज के एक तरफ स्पष्ट सुपाठ्य अक्षरों में लिखी हुईं या टंकित होनी चाहिए. रचनाओं पर मौलिकता व उनके अप्रकाशित होने का उल्लेख अवश्य करें. बिना उचित टिकट लगे जवाबी लिफाफे के अस्वीकृत रचना लौटाई नहीं जाती.
3. रचना प्रेषण के कम से कम तीन माह तक अन्यत्र प्रकाशित होने के लिए रचना न भेजें और न ही कहीं प्रकाशित रचना भेजने. वैसे तो पत्रिका सभी बुक स्टालों पर उपलब्ध कराई जा रही है. फिर भी मिलने में असुविधा हो तो सदस्यता ग्रहण कर लें, पत्रिका डाक द्वारा भेज दी जाएगी.
4. सदस्यता शुल्क पत्रिका के खाते में सीधे जमा कर/धनादेश/बैंक ड्राफ्ट द्वारा 'विश्व स्नेह समाज' के नाम भेजें. शुल्क के साथ-साथ एक पोस्टकार्ड भी भेजें, जिस पर अपना नाम व पता साफ-साफ लिखें.
5.जो रचनाएँ आपको अच्छी लगें उस बाबत रचनाकार को खत लिखकर अवश्य प्रोत्साहित करें.
6. 'विश्व स्नेह समाज' के परिशिष्ट अथवा प्रायोजित विशेषांक योजना में शामिल होने के लिए 09935959412 या 09335155949 पर सम्पर्क करें.
7. विश्व स्नेह समाज मात्र एक पत्रिका नहीं है बल्कि समाज में एक रचनात्मक क्रांति लाने की माध्यम है. इसे हर सम्भव सहयागे प्रदान करें.

❑संपादक

यादें

# मेरा सुन्दर सपना बीत गया

-डॉ० नरेन्द्र नाथ लाहा
ग्वालियर, म.प्र.

गीता दत्त अपने समय की और आज भी चोटी के हिन्दी सिनेमा गायिकाओं में गिनी जाती हैं. इनका जन्म पूर्व बंगाल के फरीदपुर में १६३० को हुआ था. जमींदार परिवार में जन्मी गीता राय बारह वर्ष की थी जब उनके माता-पिता बम्बई आ गए. संगीतकार हनुमान प्रसाद जी ने उनको संगीत की शिक्षा दी और एक कोरस गाने में दो पंक्तियां (भक्त प्रहलाद) गाने का १६४६ में मौका दिया. फिर उन्हें गाने के और भी मौके मिले जैसे कश्मीर की कली, रसीली एवं सरकस किंग. संगीतकार एस.डी. बर्मन ने उन्हें और भी मौके दिये. 'मेरा सुन्दर सपना बीत गया' सफलतम गानों में आया. १६५१ में फिल्म 'बाजी' आई और 'तदवीर से बिगड़ी हुई तकदीर बना ले' गीत जबर्दस्त हिट हुई. २६ मई १६५३ को निर्देशक गुरूदत्त से उनका विवाह हुआ. उनके तीन बच्चे हुए, तरुण, अरुण और नीना. संगीतकार ओ.पी.नैय्यर के साथ उनके १८ गाने आए जिसमें 'बाबू जी धीरे चलना' और 'ऐ लो मैं हारी पिया' ने बुलंदियां छुई. 'भाई-भाई' का गाना 'ऐ दिल मुझे बता दें' और 'हावड़ा ब्रिज' का गाना 'मेरा नाम चिन चिन चू' खूब सफल रहे और आज भी यादगार बने हुए हैं और अविस्मरणीय हैं. 'दो भाई', 'बाजी', 'मुनीम जी', 'नौ दो ग्यारह', 'कागज के फूल' और 'सुजाता' में एस.डी.बर्मन के लिये गीता ने सफल गाने गाए. गीता दत्त ने संगीतकार अविनाश व्यास के संगीत निर्देशन में कई सफल गुजराती फिल्मों के लिए भी गीत गाया. गीता दत्त ने कई हिट बंगाली गाने गाये जैसे तूमी जे आमार (१६५७), निशी रात बांका चांद (१६५७), ओगो शून्दोर जानो नाकी (१६५८), एई मायावी तिथि (१६५६), एई शून्दोर शॉरनोली शोन्धा(१६६०), एवं आमी शूनची तोमारी गान (१६६१). पारिवारिक जीवन के दुःखों ने गीता दत्त को गाना छोड़ने पर मजबूर किया और आखिरी बार १६७१ में 'अनुभव' के लिए गाया. गुरूदत्त की १० अक्टूबर १६६४ को मृत्यु हो गई. गीता दत्त दुःखी रहने लगी. २० जुलाई १६७२ को उनकी भी मृत्यु हो गई.

गीता दत्त ने करीब एक हजार हिन्दी गाने ५०० फिल्मों के लिए गाए. इस महान गायिका को बार-बार प्रणाम.

# जो कटोरा लेकर भीग माँगता हो, वह बेरोजगार है

## उत्तर प्रदेश सरकार का बेरोजगारी भत्ता योजना

बेरोजगार व्यक्ति के परिवार की समस्त स्रोतों से आय रु० ३६०००/-वार्षिक अथवा इससे कम होनी चाहिए. यानी वह शिक्षित व्यक्ति जो जिसके पास न तो खेत हो, न कोई व्यवसाय हो, न कोई काम करता हो. बिलकुल असहाय हो. परिवार की परिभाषा व बेरोजगारी भत्ते के लिए निर्धारित उम्र (२५ से ४०) को देखते हुए वह बेरोजगार शादी शुदा हो (न्यूनतम एक या दो बच्चे होगें यानि कम से कम ३ या ४ सदस्य हो)

आटा १५रुपये किलो, चीनी ४०रुपये किलो, तेल ६० रुपये लीटर, आलू २० रुपये किलो, सबसे सस्ती हरी शब्जी २०रुपये किलो, दूध ३०रुपये लीटर, चायपत्ती २५० रुपये किलो.

(न्यूनतम अन्न ७५०ग्राम प्रतिदिन यानी २६.५०, चीनी २०० ग्राम यानि ७.६०रु०, तेल १००ग्राम या ६.०रु०, शब्जी ६ रुपये, दाल १४ रुपये) मतलब ३ लोगों के परिवार में न्यूनतम भोजन पर खर्च ६६रुपये प्रतिदिन, मासिक २०४६, २४५५२ वार्षिक खर्चा, दवा व अन्य खर्च अतिरिक्त. जो न कर पाता है. अभिप्राय यह की जो कटोरा लेकर भीग माँगता हो वह बेरोजगार है.

अगर आप ऐसे हैं तो बेरोजगारी भत्ता के लिए अपने निकटतम रोजगार दफ्तर में आवेदन करें.

दाउजी

# सम्मानार्थ प्रविष्टियाँ आमंत्रित हैं

साहित्य जगत् में लोकप्रिय, विश्वसनीय एवं राष्ट्रीय स्तर पर चर्चित **विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान** द्वारा २००३ से लगातार साहित्यिकारों/पत्रकारों/समाजसेवियों/कलाकारों को सम्मानित करता आ रहा है. इस वर्ष निम्नांकित सम्मान प्रस्तावित है-

**कैलाश गौतम सम्मान**-(हास्य/व्यंग्य रचना पर)-किसी भी विधा की एक रचना तीन प्रतियों में, **डॉ.किशोरी लाल सम्मान**-(श्रृंगार रस की रचना) अप्रकाशित एक रचना तीन प्रतियों में, **प्रवासी भारतीय सम्मान**-ऐसे प्रवासी भारतीय जो हिंदी की किसी भी विधा में लिख रहे हों. एक रचना की तीन प्रतियां, **हिंदी सेवी सम्मान**-(विदेशी/अहिन्दी भाषी नागरिक)- किसी भी विधा की एक रचना तीन प्रतियों में, **राजभाषा सम्मान**-सरकारी/अर्द्धसरकारी विभागों/उपक्रमों में कार्यरत राजभाषा अधिकारियों द्वारा हिन्दी के विकास के लिए. विस्तृत विवरण तीन प्रतियों में, **राष्ट्रभाषा सम्मान**-अहिन्दी भाषी क्षेत्र में हिंदी के उत्थान के लिए, प्रमाणिक विवरण तीन प्रतियों में, **युवा कहानीकार/युवा व्यंग्यकार/युवा कवि सम्मान**-(उम्र ३५ वर्ष से कम)-संबंधित विधा की एक रचना तीन प्रतियों में, **कला/संस्कृति सम्मान**-किसी भी कला (संगीत, नाटक, कला, पेंटिग, नृत्य आदि) के क्षेत्र में उत्कृष्ठ योगदान के लिए, विस्तृत विवरण तीन प्रतियो में, **बाल साहित्यकार सम्मान**-(उम्र २१ वर्ष)-किसी भी विधा की एक रचना तीन प्रतियो में, **राष्ट्रीय प्रतिभा सम्मान**-हिन्दी सेवा के साथ-साथ किसी भी क्षेत्र में विशेष योगदान के लिए, प्रमाणिक विवरण तीन प्रतियों में. **राष्ट्रीय युवा प्रतिभा सम्मान**-(उम्र ३५ वर्ष से कम)-किसी भी क्षेत्र में विशेष योगदान के लिए, **पुलिस हिंदी सेवा सम्मान**- पुलिस सेवा में रहते हुए हिन्दी को बढ़ावा देने वाले, सम्पूर्ण विवरण एक अप्रकाशित रचना तीन प्रतियों में, **सांस्कृतिक विरासत सम्मान**- ऐसे व्यक्ति/संस्थाएँ जो देश के किसी भी क्षेत्र में स्थानीय संस्कृति को बढ़ावा देने में अपना अमूल्य योगदान दे रहे हैं, सम्पूर्ण विवरण तीन प्रतियों में, **विधि श्री**-विधि प्रक्रिया में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने वालों को प्रामाणिक विवरण तीन प्रतियों में, **डॉक्टरश्री**-डॉक्टरी पेशे में रहते हुए हिंदी की सेवा के लिए, प्रामाणिक विवरण तीन प्रतियों में, **शिक्षक श्री**-शिक्षा के क्षेत्र में रहते हुए हिन्दी को बढ़ावा देने के लिए, प्रामाणिक विवरण तीन प्रतियों में, **सैनिक श्री**-सैन्य सेवा में कार्य करते हुए हिंदी की सेवा प्रामाणिक विवरण तीन प्रतियों में, **विज्ञान श्रीः** विज्ञान वेत्ता जो विज्ञान को हिंदी में बढ़ावा दे रहे है, प्रामाणिक विवरण तीन प्रतियों में, **प्रशासक श्री**-ऐसे प्रशासक जो किसी भी प्रकार से हिंदी को बढ़ावा दे रहे हो, प्रामाणिक विवरण तीन प्रतियों में, **विहिसा अलंकरण**-हिन्दी की किसी भी विधा में प्रकाशित/अप्रकाशित १०० पृष्ठों की एक किताब के लिए,

**उपाधियां** उपाधियां प्रकाशित/अप्रकाशित कम से कम १०० पृष्ठीय कृति पर ही प्रदान की जायेगी. **साहित्य के क्षेत्र में**ः साहित्य भूषण, साहित्य शिरोमणि, साहित्य सम्राट, कहानी सम्राट, कहानी रत्न, काव्य रत्न, काव्य श्री, काव्य शिरोमणि, दोहा श्री, ग़ज़ल श्री

विशेषः१. प्रविष्टि के साथ एक पोस्ट कार्ड, एक टिकट लगा जवाबी लिफाफा, सचित्र स्वविवरणीका और २०० रुपये मात्र का धनादेश/बैंक ड्राफ्ट/मल्टी सिटी चेक अथवा **युनियन बैंक ऑफ इंडिया** की किसी भी शाखा से **'सचिव विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान, इलाहाबाद'** के नाम से **खाता संख्याः 538702010009259** में जमा कर, जमा पर्ची की छाया प्रति आवेदन के साथ संलग्न कर भेजना अनिवार्य होगा.

२. सम्मान में प्रतिभागी सभी साहित्यकारों को राष्ट्रीय हिन्दी मासिक 'विश्व स्नेह समाज' की वार्षिक सदस्यता निःशुल्क प्रदान की जाएगी. जो जनवरी २०१३ से लागू होगी.

३. प्राप्त पुस्तकें/रचनाएँ किसी भी दशा में लौटाई नहीं जाएँगी. रचनाओं के साथ मौलिकता को दर्शाना अनिवार्य होगा. प्रत्येक

पृष्ठ पर अपने हस्ताक्षर अवश्य करें. संस्थान को प्राप्त रचनाओं को प्रकाशित करने का अधिकार होगा.

४. सम्मान किसी भी परिस्थिति में डाक से प्रेषित नहीं किया जाएगा.

५. अपूर्ण प्रविष्टियों पर विचार नहीं किया जाएगा. न ही इस संदर्भ में कोई पत्र-व्यवहार किया जाएगा.

६. प्रत्येक सम्मान के लिए एक विद्वजन का ही चयन किया जाएगा जो सर्वोच्च होगा. पुरस्कारों हेतु चयन एक निर्णायक मण्डल द्वारा किया जायेगा जो अंतिम व सर्वमान्य होगा. इसमें किसी भी प्रकार की शिकायत स्वीकार्य नहीं होगी. किसी प्रकार के विवाद के संबंध में न्यायिक क्षेत्र इलाहाबाद होगा.

७. सम्मान समारोह इलाहाबाद में आयोजित किया जाएगा. चयनित सभी विद्वद्जनों को डाक से/दूरभाष/ई-मेल के माध्यम से सूचना दी जाएगी.

**अंतिम तिथिः ३० अक्टूबर २०१२**

अन्य जानकारी के लिए सम्पर्क करें:-

सचिव, **विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान,**

एल.आई.जी-६३, नीम सराय कालोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद-२११०११, उ.प्र.

मो०: ०९३३५१५५९४६, ईमेल-sahityaseva@rediffmail.com

## सम्मान हेतु आवेदन पत्र

सेवा में

सचिव

विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान

इलाहाबाद

विषयः ..........................सम्मान/उपाधि हेतु प्रविष्टि

संदर्भः

महोदय,

विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान द्वारा प्रदान किए जाने वाले.................................................................

सम्मान/उपाधि हेतु मैं अपना आवदेन प्रस्तुत कर रहा हूं। मेरा आत्म विवरण निम्नवत हैः-

नाम : ...........................................................................

पिता/पति का नामः................................................

पताः.........................................

..................................

दू०/मो०संख्या...........................ईमेल-...........................

रचना/पुस्तक/पाण्डुलिपि का शीर्षकः.......................................................

विधा....................वर्ष.........................प्रेषित प्रतियाँ..............

धनादेश/बैंक ड्राफ्ट/डीडी/चेक का विवरण, राशि......................बैंक का नाम...........................संख्या........................

.................

मैं शपथपूर्वक यह प्रमाणित करता/करती हूं कि ०१ प्रेषित रचना/पुस्तक/पाण्डुलिपि मेरी मौलिक है. इसमें किसी भी प्रकार का विवाद होने पर मैं स्वयं जिम्मेदार होऊंगा. ०२ मैंने संस्थान के पुरस्कार/सम्मान संबंधी नियम पढ़ लिए हैं और मैं उन्हें स्वीकार करता/ करती हूँ

भवदीय/भवदीया

हस्ताक्षर....................................

पूरा नाम....................................

**प्रस्तावक**

नाम..............................

हस्ताक्षर..........................

पूरा पता.......................

**सलंग्नक**

०१ सचित्र जीवन परिचय-एक प्रति ०२ टिकट लगा लिफाफा/पोस्टकार्ड-एक ०३ धनादेश/बैंक जमा पर्ची छाया प्रति-एक

०४ सम्बन्धित रचना/पुस्तक/पाण्डुलिपि- तीन प्रतियों में

# उपयोगी जानकारी

आर०पी० कौर, मोहाली

१. अलमारी में सुपारी के टुकड़े रखने से काकरोच नहीं आते.

२. चश्मे के फ्रेम पर पारदर्शी नेल पालिश लगाने से गोल्डन सिल्वर पालिश नहीं निकलती.

३. कमरे के चारों तरफ कपूर की टिकिया रखें. मक्खी, चीटियां, कीड़े आदि नहीं आएँगें.

४. तेल में नमक डालने से कोई भी चीज तलने में तेल कम जलता है.

५. मछली को धोने और काटने से पहले, थोड़ा सा तेल लगा दें, दुर्गन्ध नहीं होगी.

६. सूखी हुई नेल पालिश में थोड़ा सा नीलगिरी का तेल डाल दें, यह दोबारा लगाने के योग्य हो जाएगा.

७. बोन चाईना, कांच के बर्तन धोने से पहले पानी में थोड़ा सा सिरका डाल दें, ये ज्यादा चमकेंगे.

८. इलायची पीसने से पहले इसमें शक्कर मिला दें, आसानी से पिसेगी.

९. नीबू का उपयोग करने से पहले उसको गर्म पानी में रखे, रस ज्यादा निकलेगा.

१०. लस्सी में सोंठ व कालीं मिर्च का चूर्ण डालकर पीने से कफ ठीक हो जाता है.

११. लू से बचने के लिए लस्सी में पुदीना, भुना हुआ जीरा, सादा नमक मिलाकर पीयें

१२. दही में काली मिर्च पीसकर मिलाए, इससे सिर धोयें. बाल काले और मुलायम होंगें.

१३. यदि दही, लस्सी ज्यादा खट्टी हो गई हो तो उसे सिर पर अच्छी तरह मल ले फिर गुनगुने पानी से सिर धोले. इससे सीकरी नहीं रहेगा, बाल भी नरम होंगे.

१४. लस्सी ज्यादा खट्टी हो तो इसमें पानी मिलाए, कुछ समय बाद ऊपर का पानी निकाल दे, यह खट्टा नहीं रहेगा.

१५. थर्मस से यदि बदबू आ रही हो तो छाछ में नमक मिलाकर, थर्मस को धोलें, बदबू नहीं रहेगी.

# पहेलिया

भैरू लाल नामा, बालोतरा,म.प्र.

१. बिना धोए सब खाते हैं, खाकर ही पछताते है।
बोलो ऐसी चीज है क्या, कहते पर शरमाते है।
**धोखा**

२. तीन अक्षर का मेरा नाम, प्रथम कटे तो रहूँ पड़ा।
मध्य कटे तो रहूँ कड़ा, अन्त कटे तो बनता कप।
**कपड़ा**

३. झरना नहीं पर बहता हूँ, चलू मैं सुबह शाम।
जोभी चलेगा मेरे साथ, काम बनेगा उसका।
**समय**

४. रोज सबेरे आता हूँ, और साझ को जाता हूँ।
चलता रहता हूँ दिनभर, पाँव न धरता धरती पर।
**सूरज**

५. तीन पंख का मैं हूँ भाई, याद करे जब गर्मी आई।
उल्टा लटका रहता हूँ, ठंडी हवा बहाता हूँ।
**पंखा**

६. चार पंख पर चल न पाऊ, बिना हिलाए हिल न पाऊ।
देती हूं सब को आराम, बोलो क्या है मेरा नाम।
**पलंग**

७. जिसे पूजती मां और दादी, जल चढ़ाती दीप जलाती।
आगन का पौधा कहलाए, ज्ञानी उसके गुण बतलाए।
**तुलसी का पौधा**

८. घटता बढ़ता दिखता हर दम, पर होता है गोलाकार।
अन्धकार को दूर भगाता, शीतलता का वह भण्डार।
**चन्द्रमा**

९. एक निराला धनुष है देखा, सात तरह के उसमें रंग।
बहुत बड़ा सा तना हुआ था, पर डोरी नहीं उसके संग।
**इन्द्रधनुष**

# अपने हिन्दुस्तान की

हिन्दी राष्ट्रभाषा है, अपने हिन्दुस्तान की
सभी मान्यताएँ प्राप्त है, उसे संविधान की
प्रचलित कहावते बहुत सी, चरितार्थ हुई आज
फीकी मिठाई पाओगे वही, ऊंची सी दुकान की
भविष्य वक्ता होना भी, कोई पाप नहीं है
लेकिन चिन्ता करनी होगी, पहले वर्तमान की
वर्षा के मेघ सारे यूं ही, बिना बरसे चले गये
जबाब किससे मांगे भला, फसले किसान की
छत भी न सुधरी उसकी, न खिड़की ही लग सकी
हालत वही है आज तक, हमारे पुस्तेनी मकान की
खुशबू सी आ रही है, जरुर महफिल सजी होगी
कोई कीमत क्या लगायेगा, महकते हुए जाफरान की
तुमने कद अपना भी 'यादव', बेकार में बढ़ा लिया
हर आदमी अब छूना चाहता है, छत आसमान की।

✍ **रामचरण यादव 'याददाश्त'**, बैतूल, म.प्र.

# हिन्दी के पाठक

काव्य-शास्त्र का नहीं रहा अब कोई चिन्तन।
पढ़ने की लालसा नहीं साहित्य चिरन्तन।।
नव व्यवसायिक युग में मानव का आकर्षण।
हुआ भोग सुविधा में केन्द्रित सारा जीवन।।
समाचार ही को पढ़ते हैं अब जन साधारण।
जो केवल व्यवसायी करते उत्तेजित मन।।
दृश्य माध्यमों में भी रहते वही उपकरण।
यौन और हिंसा में मूल्यों का अवमूल्यन।।
जो जागृत जन लघु-पत्रों का करें प्रकाशन।
मिलें न पाठक बड़ा कठिन है उनका नियमन।।
अल्पकाल में कवलित होते बिन लागत धन।
चिन्ता नहीं किसी को होती क्या समाज-ऋण।।

✍ **डॉ० परमलाल गुप्त,** सतना, म.प्र.

# हिन्दी

यदि हिन्दी बोलने पै क्षमा मांगना पड़े तो,
कहां हिन्दुस्तान का सम्मान रह जायेगा।
हिन्द में भी हिन्दी मातृभाषा नहीं बनेगी तो,
कहाँ संस्कृति का वितान रह जायेगा।
रखवाले ही जो संस्कृति भूलने लगेंगे,
संस्कृति का भी किसे ध्यान रह जायेगा।
यदि राष्ट्रभाषा को प्रदेश न देगा सम्मानख
राष्ट्र का भी कहाँ स्वाभिमान रह जायेगा।

✍ **लक्ष्मी प्रसाद गुप्त 'किंकर'**, छतरपुर, म.प्र.

# मेरी कसम

जिसको देखो वही है कहता मेरी तमन्ना तुम हो सनम।
मेरे दिल में तुम ही तुम हो सच कहता हूँ मेरी कसम।
तन्हाइयों का हम सफर काफूर दिल से हो गया
लगता है अब मुझे जीने का मंजिल मिल गया
क्या कहूँ कैसे कहूँ क्या दुआयें दे तुम्हें
लेकिन तेरी बेहद अदायें दे दिया सब कुछ हमें
प्यार भरे इस जीवन में सम्हलकर रहना सीखें हम
मेरे दिल में तुम ही तुम हो सच कहता हूँ मेरी कसम
पता नहीं क्यों मेरे दिल में देशभक्ति की चाह लगी है
सच कहता हूँ सच बोलो क्या प्यार मुहब्बत कहते हैं
होता है आभास मुझे सब कुछ अच्छे लगते हैं
सुखे सुनयने अब तुम देखों कहीं नहीं है कोई ग़म
मेरे दिल में तुम ही तुम हो सच कहता हूं मेरी कसम
जिस देश जाति ने जन्म दिया उसके लिये मर जाना है
आन बान मर्यादा उसकी मरकर हमें बचाना है
भारत को अब पुनः विखंडित कभी नहीं हम होने देंगे
एक रहे है एक रहेगें एक साथ मर जायेंगे
बढ़ जाये हम जितने आगे उससे आगे धरो कदम
मेरे दिल में तुम ही तुम हो सच कहता हूँ मेरी कसम।

✍ **राजेश कुमार सिंह,** इलाहाबाद, उ.प्र.

## एस.एम.एस.रचना

दोस्त के तबले के दराज में रक्खें कागज की तरह होते हैं, उनको कोई नहीं ध्यान देता, लेकिन गम होठ पर पता चलता है जैसे सांसे ही गम हो गई. मो०८७३८००१६६१

++++++++++++++++++++++++++++++++++++

फुरसत मिले तो याद करना, हमारी भी कमी का एहसास करना, हमें तो आदत है आपको याद करने की, अगर डिस्टर्व किया हो तो माफ करना.

+++++++++++++++++++++++

कशिश है ये जिन्दगी की हाल बेहाल में भी ना छोड़ेगी, दूर बहुत दूर जाना है पर खाली नहीं नूर बनके जाना है!

सुनील पारिट,८८६७४१७५०५

+++++++++++++++++++++

लव के बारे में कुछ पता है क्या?
लव क्या है जानना चाहते है?
लव श्रीराम जी का बेटा था
विस्तृत जानकारी के लिए रामायण पढ़ो
मो० ०८६५७१२४४६०

# हे गंगा

**हे** गंगा! तुम कितनी अनुपम
कितना करती काम
तुम्हारे पावन दर्शन से ही,
मिल जाता आराम।
कितनों की हो रोजी-रोटी,
विपदाओं को करती छोटी
न कहना तुम नहीं जानती
न कोई प्रतिबंध विराम।
तुम्हारा जल कल-कल नित करता
पवन थपेड़ों को अति सहता
अमृत जल को भर कर रख लें
युगों-युगों तक आता काम।
हे गंगा! तुम कितनी अनुपम
कितना करती काम।।
तुम्हारी गोदी में असंख्य
जल-चर भी जीवन जीते।
ऋषि से लेकर कृषि जगत् तक
सब जन पानी पीते।
पर सेवा में रत रहती तुम
पाती उच्च्य मुकाम।
सकल फूल-फल, माला, मूरत
हर मुंडन का बाल।
धूप, दीया, घी, अमृत चंदन
संगम तक का पुवाल।
सब कुछ सहर्ष भाव से लेकर
देती हो विश्राम।
हे गंगा! तुम कितनी अनुपम
कितनी करती काम।
मानव के निर्जीव देह को
तुम्हारे आंचल में लावारिस
लाशों को मिलता आराम।
मन की दुश्चिंता मिट जाती
आपको बस छूने से।
परम आस्था की प्रतीक हो
हृदय से मैं करूं प्रणाम।।
हे गंगा! तुम कितनी अनुपम
कितना करती काम।।

**-ईश्वर शरण शुक्ल,**
संपादकीय विभाग,'हिन्दुस्तान', इलाहाबाद

# कामचोर बेइमानो से

**वो** अपने लिए सोचता है
सिर्फ अपने लिए ही जीता है।
अपने लिए चोरी करता है
अपने लिए हेराफेरी करता है।
जितने पैसे पाता है नशे में उड़ाता है।
घर वाले उससे परेशान रहते हैं
आभावों में पलने से बेहाल रहते हैं।
समाज और देश ऐसे लोगों से
केवल नफरत ही करता है।
एक दिन वो आदमी मर जाता है।
उसके लिए कोई नहीं आंसू बहाता है।
घर वालो को दुख नहीं
क्योंकि वो गलत काम करता थां
परिवार को बदनाम करता था
समाज और देश भी
उसकी मौत से दुख नहीं है,
क्योंकि ऐसे कामचोर बेइमानों से
भारत माता भी सुखी नहीं है।

**-डॉ० संगीता बलवन्त,** हिन्दी सांसद, पूर्वांचल प्रभारी, गाजीपुर, उ.प्र.

## एस.एम.एस.रचना

खुश रहो
इसलिये नहीं की आप खुश रहना चाहते हैं, बल्कि इसलिए कि हम आपको खुश देखना चाहते हैं

+++++++++++++++++++++

एक बस स्टाप पर लड़का-मुझसे शादी करोगी?
लड़की-क्या?
लड़का-अच्छी फिल्म है ना.
लड़की-कुत्ते के बच्चे.
लड़का-क्या?
लड़की-कितने छोटे-छोटे होते हैं ना।

मो० ०८६५७१२४४६०

# चिन्तन

१. जीनव के संध्या में
सुबह का आनन्द लाओ
किताबों से दोस्ती बाँधो
पन्नों से प्यार पाओ

२. साधारण आदमी
दुःखी है परेशान है
बात-बात पर लड़ता है
प्यार के दो शब्द बोलो
उतना ही झुकता है

३. सम्बन्धों की लड़ाई पर
चिताएँ मत जलाओ
अगर सम्भव हो सके तो
मरने के बाद भी प्यार फैलाओ

४. मुर्गे की बांग पर
एक पीढ़ी जागती है
एक पीढ़ी सोती है
प्रकृति देख रोती है।

५. सुन्दरता का दर्द
उसी को मालूम है
जो मेकअप लगाता है
चेहरा छुपाता जाता है।

**-डॉ० नरेन्द्र नाथ लाहा**
ग्वालियर, म.प्र.

## एस.एम.एस.रचना

टीचर- धृतराष्ट्र के १०० पुत्र थे, पांडु के सिर्फ ५ ऐसा क्यों?
छात्र- मैडम, क्योंकि जिनकी आँखे होती है उन्हें और भी काम होते हैं..

+++++++++++++++++++++

दादी को भागवत गीता का पाठ करते देख पोता अपनी माँ से पूछा-मां दादी कौन से परीक्षा की तैयारी कर रही हैं.
मां-बेटा ये 'फाइनल इयर की तैयारी है।

मो० ०८६५७१२४४६०

## आपकी की डाक

जय हिन्द जय हिन्दी,
विश्व स्नेह समाज की,
बोली है बुलंदी।।
एक सौ बीस करोड़ संतानों की,
गर्भ धारी जननी,
पाल पोषक रक्षक कारण,
माते, लाड़ प्यार वर्द्धिनी!
भारत माता की वात्सल्य वाणी,
अमृत आनंदी;
जय हिन्द जय जय हिन्दी।।
गोद में तेरी कोई नहीं है,
गैर वैर अवहेलित
सारे जहां के शैशव कैशोर
सदा ब्रज में सुरक्षित!
जवानी बुढ़ापा नंदन वन में,
चंदन सौरभ बंदी,
जय हिन्द जय जय हिन्दी।।
बड़ी बड़ी आंखें,
देव देवी की नजरिया,
छोटी छोटी त्रुटि हारिणी,
संकट तारिणी मैया।
नव निर्माण अभिनव सृजन
जय हिन्द जय जय हिन्दी।।

**हरिहर चौधरी**, अंजाम, उड़ीसा

++++++++++++++++++++++++

आपके पूज्य पिताजी पवहारी शरण द्विवेदी का निधन का समाचार पत्रिका से मालूम हुआ. द्विवेदी जी की समाज सेवा, साहित्य सेवा, शिक्षा सेवा हमेशा याद रहेगी व हम सभी का मार्ग दर्शन करती रहेगी.

ईश्वर से प्रार्थना करते है कि दिवंगत आत्मा को शांति प्रदान करे एवं आप सभी परिवारजनों को इस असहाय दुःख की सहन करने की शक्ति प्रदान करें.

**देवदत्त शर्मा 'दाधीच'**,
जयपुर, राजस्थान

++++++++++++++++++++++++

पत्रिका का अंक मिला. एक ही बैठक में आद्योपांत पढ़ गया. 'अपनी बात' जहां सारगर्भित थी, वहीं 'विश्व हिन्दी दिवस' सम्बन्धी लेख पाठकों के लिए प्रेरक था. 'सौदागर' कहानी इस अंक की विशेष उपलब्धि थी. अखिलेश निगम 'अखिल' के दोहे एवं लघुकथा 'झण्डे वाला' सराहनीय थे तथा अनुराग मिश्र की कविता 'नहीं रही वो आग' प्रभावित करती है.

आपको धन्यवाद.

**हुक्का बिजनौरी,** बिजनौर, उ.प्र.

++++++++++++++++++++++++++

पत्रिका का अंक मिला. आपके पूज्य पिताजी के निधन का समाचार पढ़कर हृदय विदीर्ण हो गया. संस्थान की बैठक में सन् २०१२ के आगामी कार्यक्रमों के स्थगित करने का निर्णय उनके प्रति असमी श्रद्धाजलि का प्रतीक है. मैं अपने संवेदनात्मक भावों से युक्त श्रंद्धाँजलि उनके प्रति समर्पित करते हुए उस जगत नियन्ता परम पिता परमात्मा से प्रार्थना करता हूँ कि आपको तथा आपके परिवार को इस दुख को सहन करने की शक्ति प्रदान करें तथा आप उनके जीवन के कार्यो से प्रेरणा लेकर उत्तरोत्तर साहित्य सेवा करते रहे यही मेरी कामना है.

**रमेश चन्द्र त्रिवेदी 'पुष्प'**,
पीलीभीत, उ.प्र.

# समाज सेवियों को पवहारी शरण द्विवेदी स्मृति समाज सेवी सम्मान

संस्थान के संस्थापक अध्यक्ष स्व० पवहारी शरण द्विवेदी की स्मृति में इस वर्ष से समाज सेवा में उल्लेखनीय योगदान करने वाले समाज सेवियों को पवहारी शरण द्विवेदी स्मृति समाज सेवी सम्मान प्रदान किया जाएगा. इस सम्मान में **पाँच हजार एक रुपये नगद,** स्मृति पत्र प्रदान किए जाएँगें. प्रतिभागियों को अपने समाज सेवा का प्रामाणिक विवरण कार्यालय

एल.आई.जी.-६३, नीम सराय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद-२११०११, उ.प्र. के पते पर ३० नवम्बर २०१२ तक भेजना होगा.

## एस.एम.एस.रचना

मुस्कराओ आप तो फूल खिल जायें, बातें करो तो दिल मचल जाये, इतनी दिलकश है आपकी दोस्ती, दोस्त तो क्या दुश्मन भी आप पर फिदा हो जाये ऐसा लोग मेरे बारे में कहते हैं?

++++++++++++++++++++++++++++++++++++++++++++++++

पूरी दुनिया की सबसे खूबसूरत जोड़ी कौन सी?
'मुस्कुराहट और आंशु'
दोनों का एक साथ मिलना मुश्किल है, लेकिन जब ये दोनों मिलते हैं, वो पल सबसे खुबसूरत होता है

++++++++++++++++++++++++++++++++++++++++++++++++

यादों को हमने खोने न दिया, गमों ने हमें चुप होने नहीं दिया, आँखे जो आज भी भर आई उनकी याद में, पर उनकी हंसती हुई सूरत ने हमे रोने न दिया।

**मो० ०८६५७१२४४६०**

## नवल जायसवाल की 'पुर्वा पर्व' विमोचित

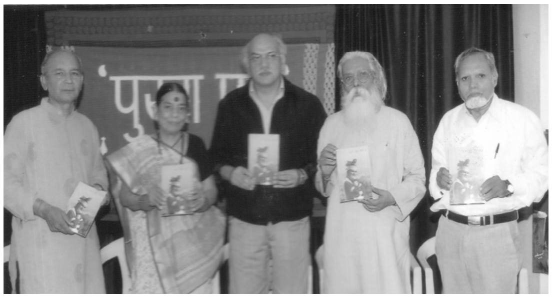

**श्रीमती** प्रमिला नवल एवं श्री नवल जायसवाल ने गत दिनों असम, मेघालय और पश्चिम बंगाल की सांस्कृतिक यात्रा की. तीनों ने छायाकला, चित्रकला और साहित्य का प्रलेखन किया और सम्मानित भी हुए. इस त्रयी यात्रा को केन्द्र में रखकर बिम्ब और वनमाली सृजनपीठ ने 'पुरवा पर्व' के नाम से एक आयोजन दुष्यंत संग्रहालय में किया. इस आयोजन में इन तीनों ने अपने-अपने द्वारा रचित कृतियों का प्रदर्शन किया. श्री नवल जायसवाल ने इस यात्रा के दौरान १६ कविताओं की रचना की और कई रेखांकन किए. इस सृजन को 'पूरवा पर्व' के नाम से प्रकाशित काव्य संग्रह में देखा जा सकता है. काव्य संग्रह का विमोचन संयुक्त रुप से श्री सन्तोष चौबे साहित्यकार, श्री बसन्त निरगुणे, शिक्षाविद, एवं संगीत के शिखर पुरुष श्री सज्जन लाल ब्रम्हभट्ट ने किया. इस अवसर पर नगर के अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे. यह आयोजन श्री नवल जायसवाल के ८०वें जन्म दिवस के उपलक्ष्य में रखा गया था. उपस्थित विद्वजनों ने उन्हें बधाई दी. कार्यक्रम का संचालन घनश्याम मैथिल ने किया.

## सम्मान, अलंकरण समारोह आयोजित

१० जून को श्री अंगिरा शोध संस्थान के तत्वावधान में 'युग-युगीन जीन्द' विषयक संगोष्ठी तथा मानद सम्मानोपाधि अलंकरण समारोह सम्पन्न हुआ. इस समारोह की अध यक्षता स्वामी ओम आनन्द सरस्वती तथा मुख्यअतिथि डॉ०प्रेमचन्द पातंजलि पूर्व उपकुलपति जौनपुर, विशिष्ट अतिथि के रूप में डॉ० सतीश चन्द्र मित्तल, श्री किशन लाल पांचाल और सतबीर सिंह पांचाल विशेष अतिथि के रूप में उपस्थित रहे. मंच संचालन डॉ० सुदेश सिवाच व नरेन्द्र अत्री ने संयुक्त रुप से किया.

कार्यक्रम में श्री अंगिरा शोधा संस्थान के निदेशक रामशरण युयुत्सु ने 'युग युगीन जीन्द' के बारे में आत्म निवेदन, उद्‌गार तथा प्राप्त लेखो का समीक्षात्मक परिचय प्रस्तुत किया. इस अवसर पर डॉ. सतीश चन्द्र मित्तल ने कहा कि 'क्षेत्रीय इतिहास मानव जीवन का संचार करता है तथा जिले के धरतीपुत्र की गाथा ही क्षेत्रीय इतिहास की जड़-मूल होती है.'

कार्यक्रम के तृतीय चरण में शिक्षक सुरेश कुमार को 'विद्या रत्न', श्री इन्द्र सिंह शास्त्री को 'साहित्य भाष्कर', पं. परशुराम शास्त्री तथा डॉ. प्रेमचन्द पातंजलि को 'साहित्य मनीषी' की मानद सम्मानोपाधि से विभूषित किया गया.

## जगदीश प्रसाद वैदिक ब्रह्मलीन

मध्य भारत के प्रखर राष्ट्रवादी नेता और इस अंचल में आर्य समाज, हिन्दू महासभा, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, भारतीय जनसंघ व भारतीय जनता पार्टी के संस्थापकों में से एक श्री जगदीश प्रसाद जी वैदिक का २४ जून २०१२ को स्वर्गवास हो गया. वे ८८ वर्ष के थे.

विदित हो कि वैदिक जी ने अपनी आयु के उत्तरकाल में सन्यास ले लिया था. इसलिए उनका नाम 'वैदिकानंद' हो गया था. उनकी शोकसभा में बाबा रामदेव, मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान, उनके मंत्री मंडल के सदस्य, धर्म गुरु, सामाजिक संगठनों के शीर्ष पदाधिकारी, साहित्यकार, पत्रकार और राजनेता सहभागी बनें.

जगदीश प्रसाद जी इंदौर के एक सामान्य अग्रवाल परिवार में १४ जून १६२४ को जन्में थे. शैशवावस्था में ही माता का निधन हो गया. बाल्यावस्था में पिता नहीं रहे और किशोरावस्था आते ही पालन का दायित्व संभाल रहे काकाजी और दादाजी का भी निधन हो गया. मात्र ८वीं तक शिक्षा ग्रहण किए श्री अग्रवाल १७ वर्ष की उम्र में आजीविका के लिए काम शुरु कियाा व १८ वर्ष की उम्र में श्रीमती कमला देवी से विवाह हो गया.

मेहनती और निडर जगदीश प्रसाद जी को अपने ही समाज की कुरीतियों से लड़ना पड़ा. जमनलाल दलाल नामक एक व्यक्ति ने अपने अग्रवाल समाज की एक बाल विधवा से विवाह कर लिया था. समाज ने दंडस्वरूप उन्हें जाति से बाहर कर दिया. क्रूरता की हद तो तब हुई जब जमनलाल जी ने जातीय पंचो के जूते अपने सिर पर रखकर मुंह में घास चबाते हुए याचना की कि उन्हें जाति में वापस ले लिया जावे. लेकिन पंच नहीं पिघले. तब जगदीश प्रसाद जी ने अपने हमउम्र जातीय साथियों के साथ जमनलाल जी के यहां भोजन किया और फोटो खिचवाकर पंचो से कहा अब हम सबको जाति से निकालकर देखो. युवा शक्ति के समक्ष पंच झुके, जमनलाल जी को जाति में शामिल किया गया. इससे उनका कद बढ़ा.

लघु कथा

# बेबस बचपन

✍संतोष शर्मा 'शान'
हाथरस, उ.प्र.

क्यों बे! भगवा...पैसे लेने तो बड़ी जल्दी पहुंचा था...और बेटे को काम से....क्यों....?

सेठ किशोरी लाल बिगड़ते हुए भगवा को डांट रहे थे.

मालिक....! वो तो टैम से रोज ही.. .चुप बे..! आज तीन दिन से थोवड़ा भी नहीं दिखाने आया और तू....रोज आ रहा है...?

उन्हें गुस्से से ज्यादा बिगड़ते देख भगवा हाथ जोड़कर बोला-'यहां से तो मैं उसे रोज...पर मालिक! आने दो. ..साले को देखूंगा.... आईन्दा ऐसा नहीं होगा...इस बार ...माफ.... कान को अच्छी खोल के सुन! यदि कल भी दुकान पर नहीं आया तो काम से तो निकालूंगा ही और जो पैसा लिए बैठा है उसका ब्याज भी धरवा लूंगा... समझा? भगवा डर के मारे सिर्फ हां में ही सिर हिला पाया. मगर वह मन में सोच रहा था 'आखिर जाता कहां है....साला....काम नहीं करेगा तो...' भगवा का बेटा कस्बे से तीन किलोमीटर दूर मेन चौराहे पर रद्दी-कबाड़ी की दुकान पर काम करता था.

गरीब बाप, आर्थिक तंगी और तीन भाई-बहनों में सबसे बड़ा कुंजा १० वर्ष का जिसे केवल पेट की आग शान्त करने के लिए ही भगवा उसे सेठ किशोरी लाल की दुकान पर २००रुपये प्रति माह के हिसाब से काम पर भेजता था.

अपने गुस्से को शांत करते जब नाले के रास्ते से सेठ गुजर रहे थे तभी उनकी नजर नाले के उस पार प्राथमिक विद्यालय के बाहर दरवाजे पर बैठे कुंजा पर क्या पड़ी. वे लम्बे-लम्बे डग भरते उसके करीब पहुंच पहले तो कमर पर हाथ रख कुछ देर उसे देखते रहे.

कुंजा स्कूल में ब्लैक बोर्ड पर पढ़ाये जा रहे आखरों को उन्हीं स्कूली बच्चों के साथ-साथ बड़े चाव व ध्यान से पढ़ता और दोहराता जा रहा था. फिर किशोरी लाल निर्दयता पूर्वक पीछे से उसके कान खींचते बोले...'क्यों बे! परसों तेरा बाप पचास रुपये राशन को मांगने आया था...याद है? मारे दर्द के कराहता कुंजा 'हां' में सिर हिला अपना कान छुड़ाने लगा.

....तो फिर...यहां बारह खड़ी पढ़ने से तो पैसा चुकता कौन करेगा...? छोड़ दो सेऽऽठ...कान..आऽई....पिड़ा रहा है....छोड़ दूं...चल दुकान पे... नहीं...नहीं...मैं पढूंगा...मुझे पढ़ना... अच्छा तो तुझे पढ़ाई का भूत...अब मूरख....अपने बाप से तो पूछ, महीना पूरा होने से पहले....पहुंच जाता है हाथ पसारे.

सेठ ने उसके कान और जोर से ऐंठ दिये तो वह बिलबिला कर रोने लगा. ऊँऽऽ ऊँऽऽ छोड़ो सेठ...मैं बस्ता लूंगा...पढ़ना...ऊँऽऽ इस दृढ़ता को देख सेठ के गुस्से ने कुंजा के कोमल गाल पर दो तमाचे जड़ दिये. चल साले. आया बड़ा पढ़ने वाला! तेरे बाप ने भी देखा है...कभी स्कूल...? और उसे धकेलता हुआ दुकान की ओर ले जाने लगा. जब कुंजा के रोने-फरियाद करने तक सेठ पर कोई असर ना हुआ तो वह सुबकता-सिसकता चुपचाप सेठ के आगे-आगे चलने लगा.

परन्तु गीली आंखें, उदास चेहरे, और निराश मन से कई-कई बार मुड़-मुड़ कर स्कूल की तरफ देखा...

फिर गली के मोड़ पर अंतिम बार एक ललकती दृष्टि स्कूल व स्कूल के बच्चों पर डाल वह सेठ के पीछे चल दिया, आंसुओं को हथेलियों से पोछते.

## हिन्दी में सर्वाधिक अंक पाने वाले सम्मानित होंगे

प्रत्येक विद्यालय/महाविद्यालय से हाईस्कूल/इंटरमीडिएट/स्नातक अंतिम वर्ष में हिंदी विषय में सर्वाधिक अंक पाने वाले छात्रों को संस्थान २००६ से सम्मानित करता आ रहा है. इसमें छात्र/छात्राओं को अपने अंक पत्र, नाम व सम्पूर्ण पता, दूरभाष/मोबाइल सं०/ईमेल प्रधानाचार्य/विभागाध्यक्ष द्वारा प्रमाणित कराकर ३० नवम्बर २०१२ तक नीचे लिखे कार्यालय के पते पर भेजें. जिस विद्यालय के छात्र लगातार पाँच वर्ष तक सम्मानित होगें उस विद्यालय के हिंदी विषय के अध्यापक/प्रवक्ता/विभागाध्यक्ष को भी सम्मानित करने की योजना है. सभी चयनित छात्रों को गरिमामय कार्यक्रम में हिन्दी उदय सम्मान व उपहार सामग्री प्रदान की जाएगी. अन्य किसी प्रकार की जानकारी व प्रस्ताव निम्नलिखित पते पर लिखें: **सचिव, विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान,**

एल.आई.जी-१४४/६३, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा,
इलाहाबाद-२११०११, उ.प्र.मो० 09335155949 **email:**

# बहुपयोगी नीम

✍ सुरजीत सिंह साहनी
कोटा, राजस्थान

प्राचीन काल से ही भारत में नीम का उपयोग विभिन्न बीमारियों के उपचार में औषधियों के रूप में, खेती की फसलों हेतु जैविक खाद एवं कीटनाशक के रूप में एवं जानवरों के आहार के रूप में किया जा रहा है. नीम की पत्तियों एवं कोपलों में विटामिन ए प्रचुर मात्रा में उपलब्ध होने के कारण यह नेत्रों की ज्योति बढ़ाने में सहायक होता है. नीम के रस को लगाने से शरीर में उत्पन्न होने वाले त्वचा रोगों से मुक्ति मिलती है. नीम मलेरिया, बवासीर, पीलिया, खुजली, एग्जीमा, दमा, त्वाचारोग एवं पायरिया जैसे छोटे-बड़े लगभग १८० रोगों में लाभ पहुँचाता है. नीम का दातुन करने से मंसूड़े एवं दांतों के रोग पायरिया में लाभ होने के अतिरिक्त मुंह की दुर्गन्ध भी मिट जाती है.

नीम का फल निबोली के अन्दर से निकलने वाले गुर्दे को खाने से डायबटीज एवं बवासीर जैसे रोगों में लाभ मिलता है. नीम के पेड़ के नीचे बैठना एवं सोना श्वास सम्बन्धी रोगों में लाभकारी होता है. नीम का कनपटी पर लेप करने से नकसीर बंद हो जाती है. नीम के पत्तों का रस शहद के साथ मिलाकर लेने से पीलिया रोग में लाभ प्राप्त होता है. कई बार पुराने नीम के पेड़ से गोंद जैसा रस निकलता है. जिसे ताड़ी भी कहा जाता है, के पीने से रक्त के विकार एवं पुराने त्वचा रोग से मुक्ति मिलती है. नीम के सेवन से नेत्र ज्योति में सुधार लगता हैं.

पूना, महाराष्ट्र की प्रयोगशाला के वैज्ञानिकों ने परीक्षणों के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला है कि नीम की पत्तियों के सत् से ब्लड-शुगर कम किया जा सकता है. इससे मधुमेह रोगियों में संभावित होने वाले अंधता के खतरे से बचा जा सकता है. 'नेचर न्यूज इंडिया' के जरनल में प्रकाशित तथ्यों के अनुसार बहुपयोगी नीम से मधुमेह नाशी औषधियाँ बनाई जा रही हैं. अध्ययन के अनुसार यदि १६ सप्ताह तक रोगी को नीम का सत उसके शरीर के वजन का २५० मिली. ग्राम प्रति किलोग्राम दिया जाए तो शरीर में ब्लड शुगर की मात्रा काफी कम हो सकती है और मधुमेह से रेटिना पर पड़ने वाला कुप्रभाव भी समाप्त हो जाता है.

आज जब विश्व रासायनिक उत्पादों के दुष्प्रभावों के प्रति जागरूक होता जा रहा है तो निःसंदेह आने वाले समय में नीम आधारित उत्पादों की मांग निरन्तर बढ़ती ही जाएगी. शोध के परिणामों के अनुसार नीम आधारित कीटनाशक एक दर्जन से अधिक हानिकारक कीड़ो-मकोड़ों, ४४ प्रकार की फफूंदों और ४० प्रकार के निमेटोड्स को नियंत्रित करने में सक्षम है. नीम की जैविक खाद कीटनाशक तत्वों से भरपुर है जो मिट्टी को सुधार कर उपजाऊ बनाने में बहुमुखी हैं. नीम की परत चढ़ाने से यूरिया की क्षमता को बढ़ाया जा सकता है. मुर्गियों, भेड़-बकरियों, ऊंटों इत्यादि जानवरों के लिए नीम की खली से विभिन्न प्रकार के पशु आहार तैयार किए जा रहे हैं. नीम आधारित औषधियों, आहार, खाद एवं सौन्दर्य प्रसाधनों के अनेकानेक उत्पाद कर और बाजार में बेचकर कई परिवार देश में अपनी दैनिक रोजी-रोटी की जीविका अर्जित कर रहे हैं.

नीम के महत्त्व को पहचानते हुए ही पड़ोसी देश चीन ने १५ करोड़ हेक्टेयर भूमि पर नीम के वृक्ष लगाए हुए है. जिससे नीम आधारित विभिन्न उत्पादों की बढ़ती माँग की पूर्ति की जा सके. नीम आधारित विभिन्न उत्पादों को बढ़ावा देने एवं तकनीकी सहायता उपलब्ध कराने के उद्देश्य से हाड़ौती क्षेत्र के जिला झालावाड़ में तकनीकी सहायता एवं प्रशिक्षण केन्द्र की स्थापना की गई है. यह वांछनीय है कि नीम से निर्मित औषधियों को मानवीकरण हो क्योंकि यह औषधियां सस्ती एवं प्राकृतिक होती है, किन्तु सिंथेक्टिक नहीं और न ही इनके सेवन से किसी प्रकार का साइड-इफेक्ट अथवा हानि होने की कोई आशंका रहती है. औषधीय गुणों वाले पौधों एवं वृक्षों के पेटेन्ट लेने के लिए विदेशी एजेन्सीया सदैव लालायित रहती है और इसी क्रम में नीम का पेटेन्ट करवा लेने में उन्हें सफलता मिल गयी है. नीम आधारित उत्पादन बनाने एवं विपणन से भारत में स्थायी रोजगार के अच्छे अवसर विकसित किए जा सकते हैं किन्तु आवश्यकता केवल प्रोत्साहन एवं पोषण की.

## अन्ना पार्टी

वरिष्ठतम समाज सेवी अन्ना हजारे ने २ अगस्त २०१२ को घोषणा की कि उनकी टीम ३ अगस्त को अनशन तोड़ देगी और २० विद्वदजनों की माँग पर राजनीतिक पार्टी बनाकर चुनाव लड़ेगी. इसकी भविष्यवाणी इस पत्रिका ने वर्ष २०११ के एक अंक में ही कर दी थी.
संपादक

# राष्ट्रभाषा विमर्श

डॉ.वी.एल.वत्स जी के नाम एवं उनकी हिन्दी सेवा, हिन्दी प्रेम से मैं पूर्व से ही भलीभांति परिचित हूँ. हिन्दी को बढ़ावा देने के लिए बहुत ही सार्थक प्रयास कर रहे हैं. आपकी कई किताबें मैंने पढ़ी हैं. गहनशील चिन्तन व विचारों से ओत-प्रोत आपकी रचनाएँ समाज, देश को एक नई दिशा देने वाली होती है. जहाँ तक प्रस्तुत संग्रह 'राष्ट्रभाषा विमर्श' की बात है तो जनभाषा, राजभाषा हिन्दी की उपेक्षा से कौन परिचित नहीं है. लेखक ने अपने पूर्व प्रकाशित संकलन 'राष्ट्रभाषा ही क्यों' की प्राप्त प्रतिक्रियाओं का सारांश उद्धृत करते हुए प्रारम्भ किया है. प्रदेशवार संकलित कुछ खास सुझाव निम्नवत हैं:-

**उत्तर प्रदेशः**-मातृभाषा की उपेक्षा से ही देश की दुर्गति हुई है. हिन्दी एक भाषा या शब्दों का संग्रह मात्र नहीं है. यह भारत की अखण्ड गरिमामयी संस्कृति की सबल, समर्थ और महान संवाहिका है. **डॉ० सत्या सक्सेना**

नए रंग से हिन्दी के राष्ट्रभाषा बनाने की जंग जीतने का समय हमारे नए प्रयत्नों की प्रतीक्षा में है.

**डॉ. राम गोपाल शास्त्री 'दिनेश'**

हिन्दी किसी की कृपा पर नहीं अपने पैरो पर स्वयं खड़ी है. यही राष्ट्रभाषा है, राजभाषा है, यही जनसंपर्क भाषा है. **डॉ०दया कृष्ण विजय वर्गीय**

हिन्दी राष्ट्रभाषा ही नहीं अपितु देश की संस्कृति, सभ्यता और संस्कार है.

**सुमति कुमार जैन**

हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने के लिए हम देश में एक प्रबल जन आन्दोलन करना होगा और नवयुवकों को उससे जोड़ना होगा. **एम.डी.कनोरिया**

**मध्य प्रदेशः**-अधिकारी हिन्दी की उपेक्षा करते हैं. हिन्दी की अनन्त शब्द-सम्पदा और स्पष्ट भावाभिव्यक्ति क्षमता उसे

**कुंवर प्रोमिल**

हिन्दी के चाहने वाले कम नहीं है जरुरत है केवल प्रचार-प्रसार की.

**प्रभात दूबे**

देश में जो अराजकता की स्थिति निर्मित हुई है, उसके मूल में राष्ट्रभाषा, हिन्दी की उपेक्षा ही मुख्य हैं. साहित्य से वियोगी हुंकार से देश जाग जायेगा.

**हरिनारायण नीमा**

**महाराष्ट्रः** जिस देश में कृष्ण और सुदामा सहपाठी रहे हो, उसे अन्यत्र देखने की आवश्यकता नहीं है, सिर्फ संकल्प लेकर कुछ करने से ही हिन्दी भारत की राष्ट्रभाषा बन सकती हैं.

**सत्यनारायण मिश्र**

हिन्दी को भारत की राष्ट्रभाषा बनाना हमारी कथनी और करनी के साम्य से ही सम्भव है. **डॉ. मालती शर्मा**

**आन्ध्र प्रदेशः**-एक मात्र हिन्दी ही हमारी सामाजिक संस्कृति के समन्वय की प्रतीक है. **एन.गोपी**

**हरियाणाः**-हिन्दी को भारत की राष्ट्रभाषा बनाने के लिए प्रत्येक नागरिक को अपनी जिम्मेदारी उठानी चाहिए.

**श्रीमती उर्मिकृष्ण**

**पश्चिम बंगालः**-हिन्दी भाषा के बिना शनैः शनैः हिन्दुस्तान अपनी पहचान खो देगा. हिन्दी हिन्द के सीने की धड़कन है. **जय कुमार रुसवा**

इस संग्रह की दूसरी लेखिका डॉ. ललिता वत्स रायजादा ने 'आखिर कब जागेंगे हम?' में ठीक ही लिखा है कि 'आज ऐसा प्रतीत होता है कि मानों पराधीनता की बेड़ियों में जकड़े रहना हमारी आदत हो गई है. हम अपनी भाषा को त्यागकर अंग्रेजी के पीछे दौड़े चले जा रहे हैं.' लेखिका ने भारतेन्दु हरिश्चन्द्र की निम्नलिखित पंक्तियां

अंग्रेजी पढ़ि के जदपि

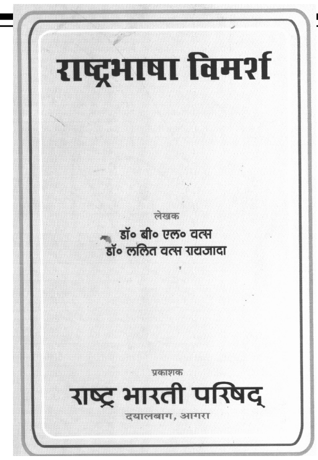


सब गुन होत प्रवीन।

पै निज भाषा ज्ञान बिन

रहत हीन के हीन।

लेखिका ने हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने के लिए एक संग्राम छेड़ने की अपील की है, जो सही प्रतीत होती है. वर्तमान समय में हिन्दी के प्रति दुर्भावना को देखते हुए. लेखिका ने आगे एक में लिखा है 'यदि हम अपने सपनों का भारत चाहते हैं तो अपनी भाषा और अपनी संस्कृति को तो अपनाना ही होगा. आवश्यकता इस बात की है कि हम हिन्दी भाषी हिन्दी को लेकर आत्म सम्मान को जागृत करें और हिन्दी के प्रति हीनता के भाव को समाप्त करें.' कुल मिलाकर यह कहा जा सकता है कि डॉ. वत्स की पीड़ा हिन्दी भाषा की उदासीनता के प्रति स्पष्ट रूप से झलकती है. जिसके लिए उन्होनें कई बिन्दुओं पर काबिले गौर सुझाव भी दिए हैं. जो सराहनीय एवं स्वागत योग्य पहल हैं. इस तरह के संकलन का स्वागत किया ही जाना चाहिए.

डॉ० वी.एल.वत्स एवं डॉ. ललित वत्स रायजादा की इस ६४ पृष्ठीय पुस्तक को राष्ट्र भारती परिषद, आगरा ने प्रकाशित किया है. इसका मूल्य मात्र ३० रुपये है.

**समीक्षकः** गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी

## हमारे प्रकाशन :

एक वकील साहित्यकार की डायरी

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 01 | हरियाणा साहित्य एक विहंगम दृष्टि | लेखक : विधिश्री पवन चौधरी मनमौजी | मूल्य 151 रूपये | (सजिल्द 200 रूपये) |
| 02 | संस्मरण तेरे गीत मेरे मीत | लेखक : विधिश्री पवन चौधरी मनमौजी | मूल्य 151 रूपये | (सजिल्द 200 रूपये) |
| 03 | मेरे गीत तेरे मीत | लेखक : विधिश्री पवन चौधरी मनमौजी | मूल्य 151 रूपये | (सजिल्द 200 रूपये) |
| 04 | कचहरी में कोहिनूर (लघुकथाएं) | लेखक : विधिश्री पवन चौधरी मनमौजी | मूल्य 151 रूपये | (सजिल्द 200 रूपये) |
| 05 | अज्ञेय मनमौजी के मधुर संवाद | लेखक : विधिश्री पवन चौधरी मनमौजी | मूल्य 51 रूपये | |
| 06 | पत्र संग्रह, तेरे नाम मेरे नाम | लेखक : विधिश्री पवन चौधरी मनमौजी | मूल्य 151 रूपये | (सजिल्द 200 रूपये) |

| | | |
|---|---|---|
| **कहानी / उपन्यास / लघुकथा** | | |
| रोड इंस्पेक्टर | लेखक : गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी | मूल्य : 51 रूपये |
| जगन की कनिया : कहानी संग्रह (पेपरबैक) | | |
| (साजिल्द) | | मूल्य : 151 रूपये |
| **काव्य :** | | |
| ये आग कब बुझेगी भाग-2 | सम्पादक : गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी | मूल्य : 25 रूपये |
| काल कथानक - खण्ड काव्य | रचनाकार : आर.पी.सक्सेना, उर्फ रज्जन | मूल्य : 51 रूपये |
| नन्हीं सी कोंपल | रचनाकार : यदुमणि कुम्हार | मूल्य : 51 रूपये |
| काव्य बिम्ब-काव्य संग्रह | संपादक : गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी | मूल्य : 51 रूपये |
| कैसे कहूँ-काव्य संग्रह | संपादक : सूर्य नारायण शूर | मूल्य : 51 रूपये |
| सुप्रभात-काव्य संग्रह | संपादक : गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी | मूल्य : 25 रूपये |
| अपराध (खण्ड काव्य) | लेखक : राजेश सिंह | मूल्य : 21 रूपये |
| मधुशाल की मधुबाला (खण्ड काव्य) द्वितीय संस्करण) | लेखक : राजेश सिंह | मूल्य : 25 रूपये |
| मधुशाला की मधुबाला (खण्ड काव्य) प्रथम संस्करण) | लेखक : राजेश सिंह | मूल्य : 10 रूपये |
| नेता ब्याज स्तुति | बी.आर. परमार | मूल्य 151 रूपये |
| **आलेख :** | | |
| एक अद्‌भुत व्यक्तित्व-डॉ अनवार अहमद | संपादक : गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी | मूल्य : 25 रूपये |
| **अन्य** | | |
| तिरंगी पहेलियाँ | रचनाकार : मुखराम माकड़ 'माहिर' | मूल्य : 21 रूपये |
| ये आग कब बुझेगी : भाग-1 | संपादक : गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी | मूल्य : 100 रूपये |
| पत्रकार यज्ञ | संपादक : गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी | मूल्य : 21 रूपये |
| लर्निंग कम्प्यूटर विद फन भाग-1,2 | लेखक : गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी | मूल्य : 35 रूपये |

### विशेष :

01 संस्थान के सदस्यों 50 प्रतिशत

02 अहिन्दी भाषी राज्यों के साहित्यकारों को 40 प्रतिशत

03 हिन्दी मासिक 'विश्व स्नेह समाज' पत्रिका के आजीवन सदस्यों को 50 प्रतिशत तथा अन्य प्रकार के सदस्यों को 25 प्रतिशत, की छूट पर सभी किताबें उपलब्ध है।

अन्य किसी प्रकार की जानकारी के लिए सम्पर्क करें :

**विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान**

एल.आई.जी-144/93, सेक्टर-2, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद

E-mail : sahityaseva@rediffmail.com

स्वामी, संपादक, प्रकाशक, मुद्रक गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी द्वारा भार्गव प्रेस बाई बाग से मुद्रित कराकर एल.आई.जी.-93, नीम सरांय कालोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद से प्रकाशित किया
डाक पंजीयन संख्या : एडी-306/2008-11 आर.एन.आई. नं0 यूपीहिन्दी2001/8380 सम्पादक : गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी